विषय-सूची

परिचय पृष्ठ संख्या

1. विश्वविद्यालय का संक्षिप्त परिचय 3
2. शैक्षणिक 14
3. शोध विभाग 29
4. शान्तरक्षित ग्रन्थालय 45
5. प्रशासन 52
6. विद्यार्थियों की गतिविधियाँ 56

परिशिष्ट

1. विश्वविद्यालय द्वारा आयोजित दीक्षान्त समारोह और उनमें उपाधि से सम्मानित विशिष्ट विद्वानों की सूची 59
2. सोसायटी के सदस्यों की सूची 61
3. अधिशासी बोर्ड के सदस्यों की सूची 63
4. विद्वत् परिषद् के सदस्यों की सूची 65
5. वित्त समिति के सदस्यों की सूची 68
6. प्रकाशन समिति के सदस्यों की सूची 69

1. विश्वविद्यालय का संक्षिप्त परिचय

तिब्बती तथा सीमान्त हिमालय क्षेत्र के विद्यार्थियों के शिक्षा एवं प्रशिक्षण के उद्देश्य से, भारत के प्रथम प्रधानमंत्री पं. जवाहरलाल नेहरू तथा परम पावन 14वें दलाई लामा के पवित्र प्रयासों से सन् 1967 में स्थापित केन्द्रीय उच्च तिब्बती शिक्षा संस्थान एक अद्वितीय विश्वविद्यालय है ।

सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी के संघटक विभाग के रूप में शुभारम्भ करके सन् 1977 में केन्द्रीय उच्च तिब्बती शिक्षा संस्थान नाम के साथ, विश्वविद्यालय ने भारत सरकार के संस्कृति मंत्रालय के अधीन स्वायत्त संस्थान का दर्जा प्राप्त किया ।

दिनांक 5 अप्रैल, 1988 को विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा धारा 3 के अन्तर्गत की गई अनुशंसा के आधार पर भारत सरकार ने केन्द्रीय उच्च तिब्बती शिक्षा संस्थान की अद्वितीय कार्यपद्धति तथा उपलब्धियों के आधार पर संस्थान को मान्य विश्वविद्यालय का दर्जा प्रदान किया ।

दिनांक 30 सितम्बर, 2008 को केन्द्रीय उच्च तिब्बती शिक्षा संस्थान सोसायटी के अनुमोदन के आधार पर संस्थान का परिवर्तित नाम केन्द्रीय तिब्बती अध्ययन विश्वविद्यालय हुआ। विश्वविद्यालय के इस नये नाम का लोकार्पण परम पावन दलाई लामा जी ने दिनांक 15 जनवरी, 2009 को अपने कर-कमलों से किया।

सन् 2000 तक विश्वविद्यालय, प्रो. समदोंग रिनपोछे, विश्वविद्यालय के पूर्व कुलपति एवं वर्तमान प्रधानमंत्री, निर्वासित तिब्बती सरकार के कुशल नेतृत्व में प्रगति पथ पर अग्रसर रहा ।

इस समय यह विश्वविद्यालय, प्रो. गेशे ङवङ् समतेन, कुलपति के कुशल नेतृत्व तथा विद्वान् संकाय सदस्यों के समर्पित सहयोग से, पूर्ण कुशलता के साथ, तिब्बतॉलाजी, बुद्धोलॉजी तथा हिमालयी अध्ययन के क्षेत्र में अपने उद्देश्यों की पूर्ति हेतु सतत् अग्रसर है ।

निर्धारित विषयों के शिक्षण के साथ यह विश्वविद्यालय अपने शोध विद्यार्थियों एवं देश-विदेश के आगन्तुक शोध विद्यार्थियों का मार्गदर्शन कर रहा है। इस सन्दर्भ में यह विश्वविद्यालय बौद्ध एवं बौद्धेतर भारतीय दार्शनिक विचारधाराओं, बौद्ध एवं बौद्धेतर पाश्चात्य दार्शनिक विचारधाराओं तथा बौद्ध दार्शनिकों एवं वैज्ञानिकों के मध्य विचार विनिमय एवं संवाद के लिए एक सशक्त मंच प्रदान कर रहा है ।

विश्वविद्यालय की उच्च शैक्षणिक गुणवत्ता तथा शिक्षण-प्रशिक्षण प्रणाली को मान्यता प्रदान करते हुए, विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा स्थापित स्वायत्त संस्था, राष्ट्रीय मूल्यांकन एवं प्रत्यायन परिषद (NAAC) ने, इस विश्वविद्यालयों को सर्वोच्च पाँच सितारा संस्थान का प्रमाणपत्र प्रदान किया है ।

केन्द्रीय तिब्बती अध्ययन विश्वविद्यालय, नैक द्वारा सर्वोच्च श्रेणी प्राप्त करने वाला अपनी तरह का अकेला विश्वविद्यालय है ।

भारत सरकार तथा परम पावन दलाई लामा जी द्वारा स्थापित संस्थान की परिकल्पना एवं लक्ष्य को विश्वविद्यालय के निम्नलिखित उद्देश्यों में

समाहित किया गया है, जिनकी सतत् पूर्ति हेतु विश्वविद्यालय पिछले तीन दशकों से प्रयासरत है ।

- तिब्बती संस्कृति एवं परम्पराओं का संरक्षण ।
- ऐसे भारतीय ज्ञान-विज्ञान साहित्यों का पुनरुद्धार, जो मूल भाषा में समाप्त हो चुके हैं, परन्तु तिब्बती भाषा में उपलब्ध हैं ।
- ऐसे सीमान्त भारतीय क्षेत्रों के विद्यार्थियों को वैकल्पिक शिक्षा की सुविधा प्रदान करना, जो पूर्व में इस तरह की उच्च शिक्षा तिब्बत जाकर प्राप्त करते थे ।
- आधुनिक विश्वविद्यालय शिक्षा-प्रणाली के अन्तर्गत पारम्परिक विषयों की शिक्षा एवं प्रशिक्षण की व्यवस्था प्रदान करना तथा तिब्बती अध्ययन के क्षेत्र में उपाधियाँ प्रदान करना है।

विश्वविद्यालय के उपर्युक्त उद्देश्यों के आधार पर विश्वविद्यालय की शैक्षणिक व्यवस्था को निम्नानुसार संगठित किया गया है ।

(1) शैक्षणिक

(क) हेतु एवं अध्यात्म विद्या संकाय

(i) मूलशास्त्र विभाग

(ii) सम्प्रदायशास्त्र विभाग

(iii) बोन सम्प्रदायशास्त्र विभाग

(ख) शब्द विद्या संकाय

(i) प्राचीन एवं आधुनिक भाषा विभाग

(ii) संस्कृत विभाग

(iii) तिब्बती भाषा एवं साहित्य विभाग

(ग) आधुनिक विद्या संकाय

(i) समाजशास्त्र विभाग

(घ) शिल्प विद्या संकाय

(i) तिब्बती काष्ठकला विभाग

(ii) तिब्बती चित्रकला विभाग

(ङ) सोवा रिग्-पा एवं भोट ज्योतिष संकाय

(i) सोवा रिग्-पा विभाग

(ii) भोट ज्योतिष विभाग

(2) शोध विभाग

(क) पुनरुद्धार विभाग

(ख) अनुवाद विभाग

(ग) कोश विभाग

(घ) दुर्लभ बौद्ध ग्रन्थ शोध विभाग

(3) शान्तरक्षित ग्रन्थालय

(क) अवाप्ति एवं तकनीकी अनुभाग

(ख) सामयिकी, पत्र-पत्रिका, सन्दर्भ एवं इनफ्लिबनेट अनुभाग

(ग) तिब्बती अनुभाग

(घ) आदान-प्रदान अनुभाग

(ङ) संचयागार अनुभाग

(च) मल्टीमीडिया अनुभाग

(छ) कम्प्यूटर अनुभाग

(ज) भण्डार एवं अनुरक्षण अनुभाग

(4) प्रशासन

(क) प्रशासन-1

(ख) प्रशासन-2

(ग) परीक्षा विभाग

(घ) सम्पत्ति अनुभाग

(ङ) वित्त अनुभाग

(च) प्रकाशन विभाग

उपर्युक्त शैक्षणिक एवं शोध गतिविधियों की संगठनात्मक रूपरेखा निम्न प्रकार से की गयी है-

विश्वविद्यालय की संगठनात्मक रूपरेखा

विश्वविद्यालय का संक्षिप्त परिचय

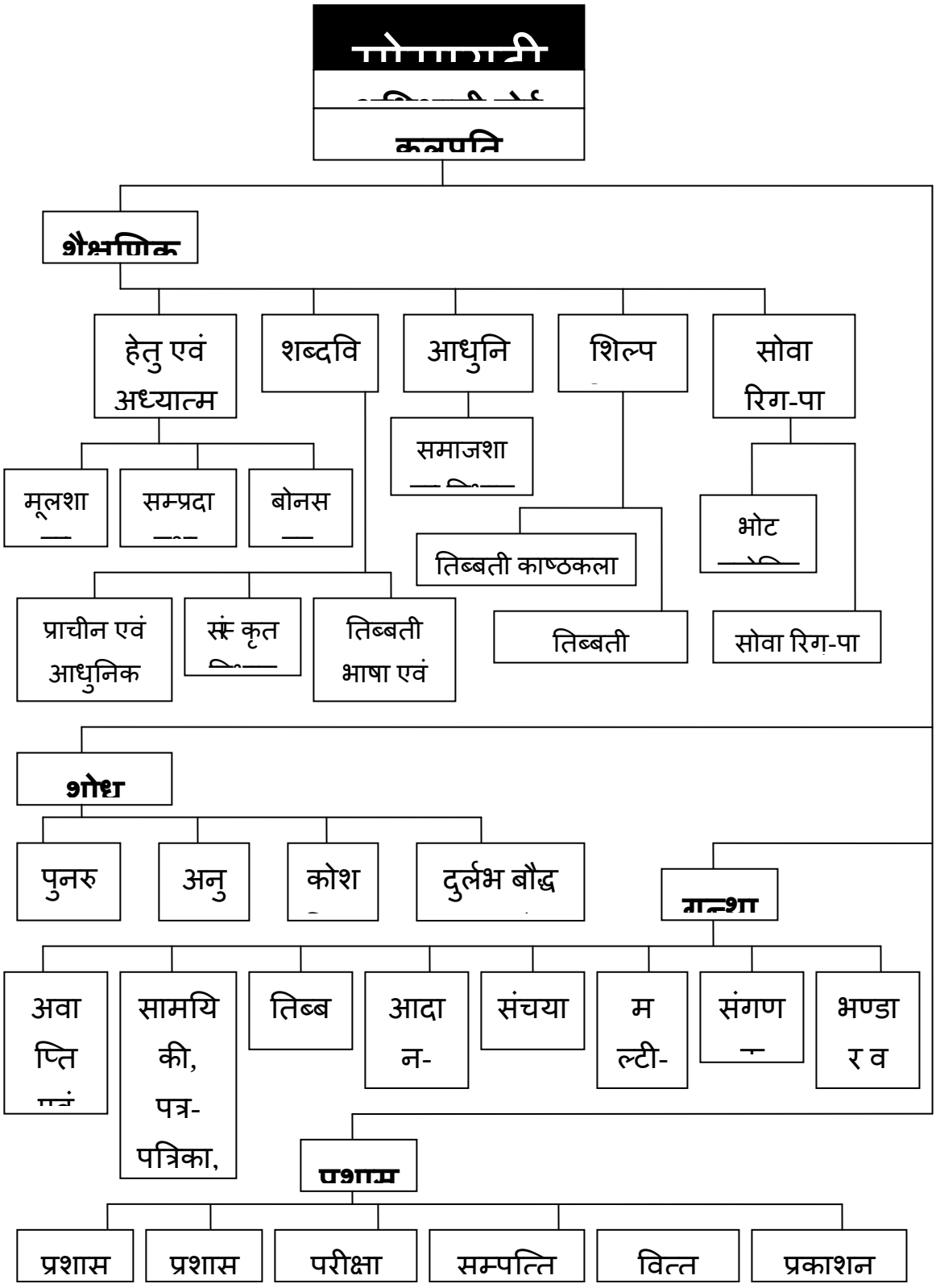

वार्षिक रिपोर्ट 2009-2010

आलोच्य वर्ष की शैक्षणिक गतिविधियों का विवरण निम्नवत है-

शैक्षणिक : पंजीकरण/ नामांकन एवं परीक्षा

प्रथम सेमेस्टर (अधिसत्र)

परीक्षा का नाम	कुल नामांकित छात्र	अनुपस्थित छात्रों की संख्या	उपस्थित छात्रों की संख्या	अनुत्तीर्ण छात्रों की संख्या	उत्तीर्ण छात्रों की संख्या	टिप्पणी
पूर्वमध्यमा, प्रथम वर्ष	54	01	53	03	50	
पूर्वमध्यमा, द्वितीय वर्ष	42	01	41	06	35	
उत्तरमध्यमा, प्रथम वर्ष	48	00	48	02	46	
उत्तरमध्यमा, द्वितीय वर्ष	41	01	40	02	38	
शास्त्री, प्रथम पर्ष	37	01	36	01	34	I R.W.
शास्त्री, द्वितीय वर्ष	48	01	47	11	35	I R.W.
शास्त्री, तृतीय वर्ष	43	00	43	00	43	
आचार्य, प्रथम वर्ष	27	03	24	05	19	
आचार्य, द्वितीय वर्ष	29	01	28	00	28	

पू.म. (आयु.), द्वितीय वर्ष	09	00	09	06	03	
उ.म. (आयु.), प्रथम वर्ष	07	00	07	00	07	
उ.म. (आयु.), द्वितीय वर्ष	05	00	05	00	05	
ज्योतिष आचार्य, प्रथम वर्ष	01	00	01	00	01	
ज्योतिष आचार्य, द्वितीय वर्ष	01	00	01	00	01	
बी.टी.एम.एस., प्रथम वर्ष	03	00	03	00	03	
बी.टी.एम.एस., तृतीय वर्ष	06	01	05	03	02	
फाइन आर्ट्स, प्रथम वर्ष	05	00	05	00	05	
फाइन आर्ट्स, द्वितीय वर्ष	05	00	05	02	03	
कुल योग	**411**	**10**	**401**	**41**	**358**	**2 R.W.**

वार्षिक रिपोर्ट 2009-2010

द्वितीय सेमेस्टर (अधिसत्र)

परीक्षा का नाम	कुल नामांकित छात्र	अनुपस्थित छात्रों की संख्या	उपस्थित छात्रों की संख्या	अनुत्तीर्ण छात्रों की संख्या	उत्तीर्ण छात्रों की संख्या	टिप्पणी
पूर्वमध्यमा, प्रथम वर्ष	54	00	54	03	51	
पूर्वमध्यमा, द्वितीय वर्ष	42	02	40	03	37	
उत्तरमध्यमा, प्रथम वर्ष	47	00	47	01	46	
उत्तरमध्यमा, द्वितीय वर्ष	40	01	39	05	33	1 Rusticate
शास्त्री, प्रथम पर्ष	37	01	36	02	34	
शास्त्री, द्वितीय वर्ष	46	00	46	01	45	
शास्त्री, तृतीय वर्ष	44	03	41	05	36	
आचार्य, प्रथम वर्ष	22	01	21	04	17	
आचार्य, द्वितीय वर्ष	32	01	31	01	30	
पू.म. (आयु.), द्वितीय वर्ष	05	00	05	00	05	

उ.म. (आयु.), प्रथम वर्ष	07	00	07	01	06	
उ.म. (आयु.), द्वितीय वर्ष	05	00	05	01	04	
ज्योतिष आचार्य, प्रथम वर्ष	01	00	01	00	01	
फाइन आर्ट्स, प्रथम वर्ष	05	01	04	00	04	
फाइन आर्ट्स, द्वितीय वर्ष	05	01	04	02	02	
बी.टी.एम.एस., प्रथम वर्ष	03	00	03	00	03	
एम.डी./एम.एस.	08	00	08	00	08	
कुल योग	**403**	**11**	**392**	**29**	**362**	**1 Rusticate**

विश्वविद्यालय की शैक्षणिक गतिविधियाँ

आलोच्य वर्ष 2009-10 में विश्वविद्यालय द्वारा आयोजित विविध शैक्षणिक कार्यक्रमों का संक्षिप्त विवरणः-

1. दिनांक 2 से 11 अप्रैल, 2009 तक विश्वविद्यालय में गुजरात विद्यापीठ एवं कशग, धर्मशाला के सहयोग से "बौद्धधर्म और हिन्द स्वराज" विषय पर संगोष्ठी का आयोजन किया गया।
2. दिनांक 4 अप्रैल, 2009 को प्रो. एस. रिन्पोछे, प्रधानमन्त्री निर्वासित तिब्बती सरकार धर्मशाला का विश्वविद्यालय में पदार्पण हुआ और इस अवसर पर उन्होंने "आज के युग में बौद्धधर्म की प्रासंगिकता" विषय पर व्याख्यान प्रदान किया।
3. दिनांक 9 मई, 2009 को विश्वविद्यालय के प्रांगण में बुद्धजयन्ती समारोह का आयोजन हुआ। इस अवसर पर शोध विभाग द्वारा प्रकाशित शोध पत्रिका धीः के 47वें अंक का बुद्धार्पण हुआ।
4. दिनांक 18-7-2009 को अमेरिकन इंस्टीट्यूट ऑफ इंडियन स्टडीज के तत्त्वावधान में कोलारोडो विश्वविद्यालय के छात्रों के दल का विश्वविद्यालय में आगमन तथा उस अवसर पर छात्रों को "भारत में प्रारम्भिक बौद्धधर्म का इतिहास" विषय पर व्याख्यान आयोजित किया गया।
5. दिनांक 22 से 23 जुलाई, 2009 को विश्वविद्यालय में सोवा रिग्-पा (सोवा-रिगपा) विभाग की ओर से "विभिन्न चिकित्सा पद्धतियों में निदान एवं उपचार का सिद्धान्त" पर कार्यशाला का आयोजन किया गया।

6. दिनांक 24 जुलाई, 2009 को राज्यसभा के माननीय सदस्या एवं विश्वविद्यालय के पूर्व अध्यक्ष ने विश्वविद्यालय को परिवार को सम्बोधित किया।
7. पूर्वमध्यमा प्रथम पर्ष के छात्रों के लिए दिनांक 29 जुलाई से 11 अगस्त, 2009 तक दो सप्ताह का "संस्कृत प्रशिक्षण शिविर" का आयोजन हुआ।
8. दिनांक 19 अगस्त, 2009 को राजभाषा इकाई द्वारा " कार्यालयी कार्यप्रणाली में राजभाषा की अनिवार्यता" विषय पर कार्यशाला का आयोजन किया गया।
9. दिनांक 1 सितम्बर, 2009 को विश्वविद्यालय के सोवा-रिगपा विभाग में प्रथम बार एम.डी./एम.एस. का पाठ्यक्रम प्रारम्भ हुआ।
10. ज्योतिष विभाग की ओर से दिनांक 22 से 28 सितम्बर, 2009 तक "कल्कुलस विद-आउट-लिमिट" विषय पर कार्यशाला का आयोजन किया गया।
11. दिनांक 2 अक्टूबर, 2009 को विश्वविद्यालय के प्रांगण में गाँधी जयन्ती का आयोजन किया गया, जिसमें प्रख्यात गाँधीदर्शन चिन्तक श्री सुनील सहस्रबुद्धे का व्याख्यान हुआ। इसका संयोजन भिक्षु एल. एन. शास्त्री ने किया तथा इस अवसर पर 150 विभिन्न प्रकार के पौधों का रोपण किया गया।
12. दिनांक 1 से 3 नवम्बर, 2009 तक आयुष विभाग, स्वास्थ्य मन्त्रालय, भारत सरकार के अनुरोध पर विभिन्न संस्थाओं एवं विश्वविद्यालयों में सोवा-रिगपा पाठ्यक्रम विषय पर परिचर्चा सत्र का आयोजन किया गया।

13. दिनांक 4 नवम्बर, 2009 को महामहिम राज्यपाल सिक्किम श्री बी. पी. सिंह का विश्वविद्यालय में आगमन हुआ तथा इस अवसर पर उनके द्वारा सद्यः प्रकाशित ग्रन्थ पर "इंडियाज़ कल्चर एण्ड बहुधा" तथा "पोस्ट 9/11" विषय पर परिचर्चा सम्पन्न हुआ।
14. प्रकाशन विभाग की ओर से दिनांक 6 से 10 नवम्बर, 2009 को कंचनजंगा शोपिंग कम्पलेक्स, गंगटोक, सिक्किम में सम्पन्न "तिब्बत फेस्टिबल" में विश्वविद्यालय के प्रकाशनों को प्रदर्शित किया।
15. श्री एवं श्रीमति ओलोवियी बाबालोवा जोसेफ यै बेनिन का यूनेस्को में स्थायी सदस्य एवं राजदूत तथा श्री तथा श्रीमति परसुरमन, निदेशक यूनेस्को का दिनांक 17 से 19 नवम्बर, 2009 को विश्वविद्यालय में आगमन हुआ।
16. दिनांक 19 नवम्बर, 2009 को ज्योतिष विभाग की ओर से प्रो. एडवर्ड हेनिन का व्याख्यान आयोजित हुआ, जिसमें उन्होंने "कालचक्रतन्त्र" विषय पर व्याख्यान दिया।
17. विश्वविद्यालय एवं दिल्ली विश्वविद्यालय के संयुक्त तत्त्वावधान में दिनांक 19 से 21 नवम्बर, 2009 तक दिल्ली विश्वविद्यालय में "तिब्बती इतिहास एवं संस्कृति" विषय पर अन्तर्राष्ट्रीय कान्फ्रेंस का आयोजन किया गया। विश्वविद्यालय से डॉ. पेन्पा दोर्जे ने कोओर्डिनेशन समिति के सदस्य के रूप में कार्य किया।
18. दिनांक 23 से 29 नवम्बर तक पुनरुद्धार विभाग और अनुवाद विभाग की ओर से प्रो. रामकरण शर्मा का व्याख्यान माला आयोजित हुआ। इस व्याख्यान माला में " काव्यादर्श के आलोक में संस्कृत काव्य",

"चरकसंहिता का महत्त्व और कुछ महत्त्वपूर्ण परिच्छेद", "शोधपद्धति" एवं "छन्दशास्त्र" विषय पर व्याख्यान हुए।

19. " संघ की नीति एवं संगणक पर हिन्दी कार्य की सम्भावनाएं" विषय पर दिनांक 19 दिसम्बर, 2009 को एक दिवसीय कार्यशाला का आयोजन हुआ।
20. दिनांक 21 से 23 दिसम्बर, 2009 तक पूना विश्वविद्यालय पूना में "बुद्धिस्ट टेक्ट्स एण्ड ट्रेडिशन" विषय पर अन्तर्राष्ट्रीय सेमिनार आयोजित हुआ, जो पालि विभाग पूना विश्वविद्यालय, नवनालन्दा महाविहार, नालन्दा और शोध विभाग केन्द्रीय तिब्बती अध्ययन विश्वविद्यालय द्वारा संयुक्त रूप से आयोजित किया गया। डॉ. पेन्पा दोर्जे एवं डॉ. बनारसी लाल इसमें आयोजन-समिति के सदस्य थे।
21. दिनांक 25 दिसम्बर, 2009 को अनुवाद एवं पुनरुद्धार विभाग द्वारा प्रो. स्टीफन जेनकिन, अध्यक्ष, धार्मिक अध्ययन हम्बोल्ट स्टेट यूनिवर्सिटी का " कम्पेशनेट वायलेंस एण्ड वारफेयर : एकार्डिंग टू सत्यवाक्परिवर्तसूत्र" विषय पर व्याख्यान आयोजित हुआ।
22. दिनांक 29 दिसम्बर, 2009 को कोलम्बिया विश्वविद्यालय के प्रो. एल. जम्पल ने " तिब्बती भाषा का संरक्षण" विषय पर व्याख्यान प्रदान किया।
23. विश्वविद्यालय के छात्र एवं पाँच विदेशी महाविद्यालयों से विश्वविद्यालय में शैक्षणिक आदान-प्रदान कार्यक्रम के अन्तर्गत आये छात्र दिनांक 4-12 जनवरी, 2010 को परम पावन जी द्वारा बोधगया के प्रदत्त व्याख्यान में सम्मिलित हुए।

24. दिनांक 12-13 जनवरी, 2010 तक तस्मानिया विश्वविद्यालय के डॉ. लीला तोयवियनेन, ने विश्वविद्यालय के छात्रों को "फिलॉसफी ऑफ नीत्से" विषय पर व्याख्यान प्रदान किया।
25. दिनांक 13 से 15 जनवरी, 2010 तक विश्वविद्यालय के शोध विभागों द्वारा " बौद्ध संस्कृत पाण्डुलिपियों का सम्पादन" विषय पर अन्तर्राष्ट्रीय वर्कशॉप का आयोजन किया गया।
26. दिनांक 17-19 जनवरी, 2010 तक प्रो. जे. गारफील्ड द्वारा रचित "पाश्चात्य दर्शन" नामक ग्रन्थ पर परिचर्चा गोष्ठी आयोजित हुई।
27. दिनांक 18 जनवरी, 2010 को स्मिथ कालेज यू.एस.ए. के प्रो. पी. ग्रेगारी ने " इम्पोर्टेन्स ऑफ सूत्राज इन द फारमेशन ऑफ चायनीज़ फिलासॉफी" विषय पर व्याख्यान प्रदान किया।
28. दिनांक 19 जनवरी, 2010 को स्मिथ कॉलेज के प्रो. ग्रेगारी ने "इमेजेस् ऑफ इन्लायटेन्मेंट इन दि अवतंसक सूत्र" विषय पर व्याख्यान प्रदान किया।
29. बोंगवांग डिजिटल युनिवर्सिटी दक्षिण कोरिया के छात्रों का दल दिनांक 2-7 फरवरी, 2010 को शैक्षणिक यात्रा में विश्वविद्यालय में रहा। इस दौरान "इथिक्स ऑफ टिबेटन मेडिकल प्रेक्टिशनर" और "वीरॉलाजी इन टिबेटन मेडिकल सिस्टम" विषय पर व्याख्यान प्रदान किये गए।
30. दिनांक 7 फरवरी, 2010 को विश्वविद्यालय में परम पावन करमापा जी का आगमन हुआ और विश्वविद्यालय के परिवार को सम्बोधित किया।

31. दिनांक 2-6 मार्च, 2010 को विश्वविद्यालय में "द दलाई लामा सेंटर फॉर इथिक्स एण्ड ट्रान्सफारमेटिव वैल्यूस" अमेरिका की ओर से "लीडरशिप प्रोग्राम" आयोजित किया गया।
32. रिपब्लिक ऑफ कालमिक रशिया का एक अध्ययन दल का विश्वविद्यालय में आगमन हुआ और शैक्षणिक आदान-प्रदान कार्यक्रम स्थापित करने के लिए 11 से 14 मार्च, 2010 तक रहा।

शैक्षणिक विनिमय कार्यक्रम

1. विश्वविद्यालय प्रतिवर्ष भारतीय तथा विदेशी विश्वविद्यालयों एवं अपने विद्यार्थियों एवं संकाय सदस्यों के बीच शैक्षणिक विनिमय कार्यक्रम आयोजित करता है।
2. आलोच्य वर्ष के अन्तर्गत विश्वविद्यालय ने आस्ट्रेलिया के तस्मानिया विश्वविद्यालय, अमेरिकी मेसाचुसेट के पाँच कालेज तथा विश्वविद्यालय, इंस्टीट्यूट ऑफ मंगोलियन एण्ड टिबेटन स्टडीज, रशियन इंस्टीट्यूट ऑफ साइन्स, बुर्यात रशियन फेडरेशन एवं वोंकवांग डिजिटल यूनिवर्सिटी, कोरिया के बीच शैक्षणिक विनिमय कार्यक्रम आयोजित किया।

कुलपति महोदय के शैक्षणिक कार्यक्रम

वर्ष 2009-10 में विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. गेशे ङवङ् समतेन के शैक्षणिक कार्यक्रमों का विवरणः-

(1) दिनांक 5 से 12 अप्रैल, 2009 तक धर्मशाला (हि.प्र.) में आयोजित "बुद्धिज्म एण्ड साइंस" विषय पर आयोजित कान्फ्रेंस में भाग लिया

तथा "माईंड एण्ड लाईफ इंस्टीच्यूट" अमेरिका के वैज्ञानिकों के साथ वार्ता की।

(2) दिनांक 21-5-2009 से 22-5-2009 तक नयी दिल्ली में एसोसिएशन ऑफ इंडियन युनिवर्सिटीज के 297 वीं मीटिंग तथा महानिदेशक पुरातत्त्व विभाग तथा इटली के राजदूत के साथ आयोजित बैठक में भाग लिया।

(3) दिनांक 2 जून, 2009 को गंगा रिसर्च सेंटर वाराणसी द्वारा आयोजित "क्रिटिकल-मॉस कन्सेप्ट फॉर मीनिमम फ्लो ऑफ रिबर" विषयक राष्ट्रीय संगोष्ठी में भाग लिया तथा वक्तव्य प्रदान किया।

(4) दिनांक 6-8-09 से 14-08-2009 तक कनाडा स्थित कैलगरी विश्वविद्यालय के कुलपति और विद्वानों के साथ आयोजित मीटिंग में भाग लिया।

(5) दिनांक 4-09-2009 से 15-09-2009 तक इंस्टीच्यूट ऑफ मंगोलिया बुद्धिस्ट एवं टिबेटन स्टडीज और सायबेरियन ब्रांच ऑफ रशियन एकेडेमी ऑफ साईंसज़ द्वारा आयोजित अन्तर्राष्ट्रीय कान्फ्रेंस "बुद्धिज्म एण्ड साइंस : डायलॉग इन टू-डेज वर्ल्ड" में भाग लिया तथा इंस्टीट्यूट के अन्य शैक्षणिक कार्यक्रमों में भाग लिया। साथ ही गदेन शेड्रुप छोय-कोर-लिंग, एलिस्थ कालमिक्या के आयोजनों में भी सम्मिलित हुआ।

(6) दिनांक 30 सितम्बर, 2010 को कुलपति महोदय ने स्टाफ एफेयर्स कमिटि ऑफ एसोसियेशन आफ इंडियन युनवर्सिटिज की बैठक में

भाग लिया तथा आयुष विभाग, स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मन्त्रालय के सचिव के साथ भी बैठक की।

(7) दिनांक 1 से 7 अक्तूबर, 2009 को एसोसियेशन आफ इंडियन यूनिवर्सिटीज के 300वें स्टेडिंग कमिटि में भाग लिया।

(8) दिनांक 22 अक्तूबर, 2009 को निर्माण विद्याश्रम (द साउथ पोइंट स्कूल सेंटर फॉर पोस्ट-कोलोनियल एजुकेशन), वाराणसी के छात्रों को सम्बोधित किया।

(9) दिनांक 26 अक्तूबर, 2009 को कार्लटन कालेज के पूर्व छात्रों को सम्बोधित किया।

(10) दिनांक 24-10-2009 से 25-10-2009 तक नवनालन्दा महाविहार, नालन्दा द्वारा आयोजित अधिसत्र चर्चा में भाग लिया तथा "कन्सेप्ट ऑफ रियाल्टी इन बुद्धिज्म एण्ड साइंस" विषय पर व्याख्यान दिया।

(11) दिनांक 6 से 7 नवम्बर, 2009 तक नयी दिल्ली में बौद्ध संस्थाओं के विकास के लिए संस्कृति मन्त्रालय भारत सरकार द्वारा गठित समिति की बैठक में भाग लिया।

(12) दिनांक 12 से 14 नवम्बर, 2009 को विश्वविद्यालय के कुलपति ने गुरु नानक देव विश्वविद्यालय, अमृतसर में एसोसियेशन ऑफ इंडियन युनिवर्सिटीज के 84वें अधिवेशन में भाग लिया।

(13) दिनांक 19-11-2009 से 21-11-2009 तक दिल्ली विश्वविद्यालय में केन्द्रीय तिब्बती अध्ययन विश्वविद्यालय और दिल्ली विश्वविद्यालय की ओर से संयुक्त रूप से आयोजित अन्तर्राष्ट्रीय

कान्फ्रेंस " एक्सप्लेरिंग टिबेट्स हिस्ट्री एण्ड कल्चर" में भाग लिया तथा विषय-प्रस्तावना प्रस्तुत की।

(14) दिनांक 25 नवम्बर, 2009 को पुरातत्त्व सर्वेक्षण विभाग, सारनाथ द्वारा आयोजित " वर्ल्ड हेरिटेज वीक" में मुख्य अतिथि के रूप में सम्मिलित हुए।

(15) दिनांक 18 दिसम्बर से 19 दिसम्बर, 2009 तक टिबेट हाउस नयी दिल्ली द्वारा " कंट्रीब्यूशन ऑफ टिबेटन कल्चर टू ग्लोबल अंडर स्टैंडिंग : प्रोग्रेस एण्ड प्रोस्पेक्ट्स" विषय पर आयोजित अन्तर्राष्ट्रीय कान्फ्रेंस में भाग लिया।

(16) दिनांक 21 दिसम्बर, 2009 को पूना विश्वविद्यालय के पालि विभाग द्वारा " बुद्धिस्ट टेक्ट्स एण्ड ट्रेडिशन" विषय पर आयोजित अन्तर्राष्ट्रीय संगोष्ठी में भाग लिया तथा संगोष्ठी को सम्बोधित किया।

(17) दिनांक 30 से 31 दिसम्बर, 2009 को केन्द्रीय तिब्बती प्रशासन, धर्मशाला, हि.प्र. द्वारा आयोजित कान्फ्रेंस में भाग लिया तथा "एजुकेशन कंडीशन" विषयक पर व्याख्यान दिया।

(18) दिनांक 4 जनवरी, 2010 से 10 जनवरी तक बौद्ध गया विहार में सम्पन्न परम पावन दलाई लामा जी द्वारा प्रदत्त प्रवचन में सम्मिलित हुए।

(19) दिनांक 13 जनवरी, 2010 से 15 जनवरी तक विश्वविद्यालय के शोध विभाग द्वारा "इडिटिंग ऑफ बुद्धिस्ट संस्कृत मैन्युस्क्रिप्ट" विषय पर

आयोजित अन्तर्राष्ट्रीय संगोष्ठी का उद्घाटन किया तथा इसमें भाग लिया।

(20) दिनांक 2 फरवरी, 2010 को वोंकवांग डिजिटल विश्वविद्यालय साउथ कोरिया के छात्रों को " एजुकेशन एण्ड स्प्रिच्युअलिटी" विषय पर व्याख्यान दिया।

(21) दिनांक 14 फरवरी, 2010 को परम पावन करमापा जी के अभिनन्दन के अवसर पर सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय में मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित हुए।

(22) दिनांक 20 फरवरी, 2010 को शिक्षा विभाग धर्मशाला द्वारा केन्द्रीय तिब्बती अध्ययन विश्वविद्यालय सारनाथ में आयोजित टी.जी.टी. वर्कशाप का उद्घाटन किया तथा इसमें व्याख्यान दिया।

(23) दिनांक 22 फरवरी, 2010 को इतिहास विभाग, महात्मा गाँधी काशी विद्यापीठ द्वारा "बुद्धिज्म इन अर्ली मिडुअल पीरियड" के समापन समारोह में मुख्य अतिथि के रूप में सम्मिलित हुए।

(24) दिनांक 6 मार्च, 2010 को थियोसाफिकल सोसायटी, कमच्छा वाराणसी में " कान्फलिक्ट एण्ड पीस : ए बुद्धिस्ट व्यू" विषय पर व्याख्यान प्रदान किया।

(25) दिनांक 7 मार्च, 2010 को ही पुरातत्त्व सर्वेक्षण विभाग, सारनाथ द्वारा "सारनाथ : पास्ट, प्रजेन्ट एण्ड फ्यूचर" विषय पर आयोजित राष्ट्रीय संगोष्ठी में सम्मिलित हुए।

(26) दिनांक 15 मार्च, 2010 को डॉ. बाबूराम त्रिपाठी द्वारा लिखित "तथागत" नामक पुस्तक का लोकार्पण किया तथा इस अवसर पर आयोजित परिचर्चा में भाग लिया।

2. शैक्षणिक

विश्वविद्यालय की शैक्षणिक गतिविधियाँ मुख्यतः अध्ययन-अध्यापन एवं शोध-कार्य है। परीक्षाओं के प्रमाण-पत्र विश्वविद्यालय स्वयं जारी करता है।

विश्वविद्यालय बौद्ध अध्ययन, तिब्बती आयुर्विज्ञान एवं ज्योतिष में शास्त्री, आचार्य, एम. फिल., पी-एच. डी. एवं एम.डी./एम.एस. पाठ्यक्रमों का संचालन करता है। इसमें विद्यार्थियों को पूर्वमध्यमा प्रथम वर्ष (नौवीं कक्षा) से ही प्रवेश दिया जाता है और उन्हें पूर्व स्नातक तक के चार वर्षीय पाठ्यक्रम को पूरा करना होता है, जो उन्हें आधुनिक विश्वविद्यालय शिक्षा-प्रणाली में दी जा रही, परम्परागत शिक्षा के निमित्त तैयार करता है। पूर्वमध्यमा से लेकर आचार्य तक, नौ वर्षीय संयुक्त बौद्ध अध्ययन के पाठ्यक्रम में विद्यार्थियों को तिब्बती, संस्कृत, हिन्दी अथवा अंग्रेजी भाषाओं का तथा भारतीय बौद्ध शास्त्रों एवं उनकी तिब्बती टीकाओं का अध्ययन कराया जाता है। इसके साथ-साथ सम्प्रदाय शास्त्र, बोन परम्परा, इतिहास, अर्थशास्त्र एवं राजनीतिशास्त्र का भी अध्ययन कराया जाता है।

सोवा रिग्-पा संकाय में परम्परागत तिब्बती चिकित्सा शिक्षा पद्धति के सैद्धान्तिक एवं प्रायोगिक अध्ययन के साथ आधुनिक चिकित्सा-विज्ञान के विकृति-विज्ञान, शरीर-रचना-विज्ञान एवं शरीर-क्रिया-विज्ञान का अध्ययन कराया जाता है। विद्यार्थियों को तिब्बती चिकित्सा पद्धति में निपुण बनाने हेतु उन्हें नैदानिक प्रशिक्षण भी दिया जाता है।

तिब्बती ललित कला के विद्यार्थियों को थंका चित्रपट के निर्माण की विधि तथा तिब्बती काष्ठ-तक्षण-कला सिखाई जाती है। इसके साथ ही बौद्ध दर्शन, तिब्बती भाषा एवं साहित्य, अंग्रेजी या हिन्दी एवं कला का इतिहास का भी ज्ञान कराया जाता है।

शिक्षण प्रविधि एवं अभिगम

विश्वविद्यालय के उद्देश्यों के अनुरूप विभिन्न पाठ्यक्रमों की संरचना की गयी है। अध्यापकों के सुझावों तथा उन पर अध्ययन परिषद् के विषय-विशेषज्ञों की सहमति के आधार पर पाठ्यक्रमों की संरचना एवं उनमें परिवर्तन-परिवर्द्धन किया जाता है तथा इन्हें अन्तिम रूप में विद्वत् परिषद एवं अधिशासी बोर्ड द्वारा पारित किया जाता है।

इनके अतिरिक्त विद्यार्थियों के व्यक्तित्व के विकास के लिए विश्वविद्यालय परिसर में सामूहिक एवं वैयक्तिक स्तर पर और भी अनेक गतिविधियाँ होती रहती हैं, जिनमें सामूहिक परिचर्चा, व्याख्यान, खेल-कूद, शैक्षणिक विनिमय कार्यक्रम एवं समाज सेवा सम्मिलित हैं। यह विश्वविद्यालय पूर्णरूप से आवासीय है। सभी पाठ्यक्रम परिसर में ही चलाये जाते हैं।

परीक्षा एवं मूल्यांकन

पंजीकृत विद्यार्थियों को परीक्षा में सम्मिलित होने के लिए कम से कम 85% उपस्थिति अनिवार्य है। परीक्षा अधिसत्रों में संचालित होती हैं।

आलोच्य वर्ष में आयोजित विभिन्न पाठ्यक्रमों की परीक्षाओं के परिणाम निम्नलिखित तालिका में प्रदर्शित किए गए हैं-

शैक्षणिक

वार्षिक रिपोर्ट 2009-2010

शैक्षणिक विभागों का परिचय

(क) हेतु एवं अध्यात्म विद्या संकाय

डॉ. वङ्छुक दोर्जे नेगी - संकायाध्यक्ष

(I) मूलशास्त्र विभाग

मानव-जीवन की वास्तविकता एवं उसके उद्देश्य को समझने में सक्षम बनाने के निमित्त बौद्ध दर्शन एवं संस्कृति का संरक्षण एवं विकास करना, इस विभाग का उद्देश्य है। इस विभाग में बौद्ध-दर्शन, न्याय, मनोविज्ञान आदि विषय, बुद्धवचन तथा भारतीय आचार्यों द्वारा रचित शास्त्रों का अध्यापन होता है। मानव एवं अन्य प्राणियों के लिये इस जगत् को बेहतर बनाने में सहायता करना भी इस विभाग का उद्देश्य है। मात्र अपने कल्याण की बात न सोचकर करुणा एवं शान्ति का आश्रय लेकर वर्तमान जगत् की आवश्यकतानुसार इन गुणों का प्रसार करना भी इसके उद्देश्यों में शामिल है। यह विभाग बौद्ध दर्शन के अध्यापन के साथ-साथ शोध-कार्य भी कर रहा है। वैश्वीकरण के इस युग में नागार्जुन के शिष्यों एवं महासिद्धों के विचारों के पुनरुद्धार एवं उनके युगानुकूल समायोजन पर उपर्युक्त विभाग शोधरत है।

(1) डॉ. फुनछोग दोन्डुप - उपाचार्य एवं अध्यक्ष

(2) भिक्षु येशे थबख्ये - आचार्य (पुनर्नियुक्त)

(3) डॉ. वङ्छुक दोर्जे नेगी - उपाचार्य

(4) भिक्षु लोब्संग यारफेल - प्राध्यापक

(5) लोब्संग थबख्ये - अतिथि प्राध्यापक

संगोष्ठियों/कार्यशाला में सहभागिता-

डॉ. वङ्छुक दोर्जे नेगी

(1) दिनांक 27 से 30 जनवरी, 2010 तक औरंगाबाद (महाराष्ट्र) में शाक्यमुनि बुद्ध तपस फाउण्डेशन द्वारा आयोजित "वज्रयान : दर्शन एवं साधना" विषयक कार्यशाला में भाग लिया।

भिक्षु लोब्संग यारफेल

(1) एम. फिल. छात्रों के शोधपत्र "रिबर्थ : पर्सपेक्टिव ऑफ बुद्धिज्म एण्ड साइंस" की परिचर्चा सत्र में भाग लिया।

(2) फरवरी से जुलाई, 2010 तक स्टडी लीव पर वेनिस कम्युनिटि एडल्ट स्कूल कैलिफोर्निया अमेरिका में अंग्रेजी भाषा के अध्ययन के लिए गया।

(3) अभिधर्म कोश एवं विनय पर टीका लिखने का कार्य किया जा रहा है।

(II) सम्प्रदायशास्त्र विभाग

इस विभाग में तिब्बती विद्वानों द्वारा बुद्धवचन एवं भारतीय आचार्यों के ग्रन्थों पर रचित टीका तथा स्वतन्त्र ग्रन्थों पर अध्यापन-कार्य होता है। भिक्षु एवं सामान्य विद्यार्थियों को तिब्बती बौद्ध परम्परा के चारों सम्प्रदायों की शिक्षा एक स्थान पर देना, इस विश्वविद्यालय की स्थापना के प्रमुख उद्देश्यों में से एक है। यद्यपि भिक्षु, बौद्ध-विहारों में रहकर बौद्ध धर्म एवं दर्शन का अध्ययन कर सकते हैं, परन्तु उनमें चारों सम्प्रदायों की एक साथ शिक्षण की व्यवस्था नहीं है। इसके अतिरिक्त सामान्य विद्यार्थियों के लिए तिब्बती बौद्ध विहारों में अध्ययन की कोई व्यवस्था नहीं है।

उक्त सिद्धान्त एवं तथ्यों के आधार पर यह विभाग तिब्बती बौद्ध परम्परा के निम्नलिखित सम्प्रदायों की परम्पराओं के अध्ययन एवं शोध में रत है–

(क) साक्या सम्प्रदाय

(1) डॉ. टशी छेरिंग (एस) - वरिष्ठ प्राध्यापक एवं अध्यक्ष

(2) भिक्षु नवांग लोडो - वरिष्ठ प्राध्यापक

(3) भिक्षु डक्पा सेङ्गे - प्राध्यापक

(4) भिक्षु नवांग जोद्पा - अतिथि प्राध्यापक

(ख) ञिङमा सम्प्रदाय

(1) भिक्षु दोर्जे छेरिंग - प्राध्यापक

(2) भिक्षु दुद्जोम नमग्यल - प्राध्यापक

(3) भिक्षु सोनम दोर्जे - अतिथि प्राध्यापक

(ग) गेलुक् सम्प्रदाय

(1) भिक्षु लोब्संग ज्ञलछेन - उपाचार्य

(2) गेशे थुबतेन लेगशेद् - प्राध्यापक

(3) गेशे तेन्जिन छोपक - प्राध्यापक

(4) भिक्षु नवांग तेनपेल - अतिथि प्राध्यापक

शैक्षणिक गतिविधियाँ-

गेशे थुबतेन लेगशेद्

1. शैक्षणिक आदान-प्रदान कार्यक्रम के अन्तर्गत विश्वविद्यालय में आये अमेरिका एवं आस्ट्रेलिया के छात्रों को 30 दिसम्बर, 2009 से 21 जनवरी, 2010 तक " वैभाषिक एवं सौत्रान्तिकों का द्विसत्य" पर व्याख्यान दिया।

2. दिनांक 4-17 अप्रैल, 2010 तक स्टूडेन्ट लीडिंग क्लब की ओर से आयोजित रिफ्रेशर कोर्स में "अभिधर्मालङ्कार" विषय पर व्याख्यान दिया।

(घ) कर्ग्युद सम्प्रदाय

(1) भिक्षु सोनम ग्यात्सो - आचार्य

(2) भिक्षु लोब्संग थोक्मेद - उपाचार्य

(3) डॉ. टशी सम्फेल - वरिष्ठ प्राध्यापक

(4) भिक्षु रमेशचन्द्र नेगी - प्राध्यापक

(5) भिक्षु लोब्संग छुलट्रिम भूटिया - अतिथि प्राध्यापक

शैक्षणिक गतिविधियाँ-

भिक्षु लोब्संग छुलट्रिम भूटिया

1. दिनांक 27 से 30 जनवरी, 2010 को शाक्यमुनि तपस फाण्डेशन, औरंगाबाद द्वारा आयोजित कार्यशाला "वज्रयान : दर्शन एवं साधना" में भाग लिया तथा "माइण्ड ट्रेनिंग" विषय पर शोधपत्र पढ़ा।
2. कुनख्येन पद्मा करपो द्वारा रचित धार्मिक इतिहास के ग्रन्थ का अंग्रेजी अनुवाद का कार्य किया जा रहा है।
3. " परजन्म की सत्ता" विषय पर चार लेख तिब्बती एवं अंग्रेजी भाषा में लिखा, जो शोध पत्रिका में प्रकाशन के लिए स्वीकृत है।
4. ग्यलवङ ड्रुक्पा द्वितीय की कृति का "स्पलीकेशन ऑफ लाईफ आफ्टर डेथ" शीर्षक से अंग्रेजी भाषा में अनुवाद लगभग पूर्ण कर लिया गया है।

(III) बोन सम्प्रदायशास्त्र विभाग

बोन सम्प्रदाय तिब्बत का एक प्राचीन धर्म है। इसकी हजारों वर्षों से अविच्छिन्न ऐतिहासिक, धार्मिक एवं दार्शनिक परम्परा चली आ रही है। इस सम्प्रदाय में प्रचुर मात्रा में दर्शन, तर्क-शास्त्र आदि विषयों के साहित्य उपलब्ध हैं।

इस विश्वविद्यालय में बोन सम्प्रदाय के साहित्यों को दो भागों में विभाजित कर सुयोग्य अध्यापकों द्वारा अध्ययन-अध्यापन की व्यवस्था की गयी है। प्रथम भाग में बोन सम्प्रदाय के शास्ता शेनरब द्वारा उपदिष्ट वचनों और पूर्व के आचार्यों के ग्रन्थों को तथा द्वितीय भाग में 8वीं शताब्दी के पश्चात् के आचार्यों के ग्रन्थों को रखा गया है।

(1) भिक्षु गोरिग तेन्जिन छोदेन - उपाचार्य एवं अध्यक्ष

(2) भिक्षु जी.एल.एल. वांग छुक - प्राध्यापक (सीनियर स्केल)

(3) भिक्षु एम.एल. तेन्जिन गेलक - प्राध्यापक

(5) भिक्षु सी.जी.एस. फोनछोक निमा - प्राध्यापक

(4) भिक्षु एम.टी. नमदक छुकफुद - अतिथि प्राध्यापक

(ख) शब्द विद्या संकाय

डॉ. बाबूराम त्रिपाठी - संकायाध्यक्ष

(I) प्राचीन एवं आधुनिक भाषा विभाग

(1) डॉ. बाबूराम त्रिपाठी - उपाचार्य (हिन्दी)

(2) श्रीमती डॉ. किरण सिंह - प्राध्यापिका एवं अध्यक्ष (हिन्दी)

(3) डॉ. कु. गीता बरुआ - उपाचार्य (अंग्रेजी)

(4) डॉ. सुरेन्द्र कुमार - उपाचार्य (पालि)

(5) डॉ. मौसमी गुहा बैनर्जी - प्राध्यापिका (अंग्रेजी)

(6) भिक्षु विचित्रसर - अतिथि प्राध्यापक (पालि)

शैक्षणिक गतिविधियाँ-

डॉ. किरण सिंह

(1) दिनांक 31-07-2009 को " भारतीय समाज और प्रेमचन्द का लेखन" विषय पर एक संगोष्ठी का आयोजन किया।

(2) बाहरी विद्वानों द्वारा हिन्दी के विद्यार्थियों के लिये विशेष व्याख्यान आयोजित किया।

डॉ. बाबूराम त्रिपाठी

(1) दिनांक 7-9-2009 से 14-10-2009 तक " परिनिष्ठित हिन्दी प्रयोग" विषयक प्रशिक्षण शिविर का आयोजन किया।

(2) " यशोधरा" आत्मकथा उपन्यास सम्पन्न किया।

डॉ. मौसमी गुहा बैनर्जी

(1) प्रोफेसर पीटर ग्रेगरी का "इमरजेंस ऑफ चायनीज बुद्धिज्म" विषय पर विशिष्ट व्याख्यान का आयोजन किया।

(2) " नीत्से एवं पाश्चात्य दर्शन" विषय पर तस्मानिया विश्वविद्यालय के प्रो. लीला तोयनियानेन का व्याख्यान माला आयोजित किया।

(3) दिनांक 14 से 15 दिसम्बर, 2009 को कोलकाता में इंडियन इन्स्टीच्यूट ऑफ सोशल क्वे फेयर एण्ड विजनेस मैनेजमेंट द्वारा "डिसीजन मेकिंग इन मैनेजमेंट एण्ड इश्यूज इन सस्टेनेबल डेवलेपमेंट" विषय पर आयोजित अन्तर्राष्ट्रीय कान्फ्रेन्स में भाग लिया तथा "कारपोरेट सोशल

रेस्पांसिबिलिटी : द मोडस ओपेरान्डी टूबार्ट्स एकोम्पलिशिंग विजनेस सेस्टेनबिलिटि" विषय पर शोधपत्र प्रस्तुत किया।

(II) संस्कृत विभाग

(1) डॉ. धर्मदत्त चतुर्वेदी - वरिष्ठ प्राध्यापक एवं अध्यक्ष

(2) प्रो. के.एन. मिश्र - आचार्य (पुनर्नियोजित)

(3) डॉ. अनिर्वाण दास - अतिथि प्राध्यापक

विभागीय कार्य-विवरण-

(1) प्रथम अधिसत्र में अनिवार्य संस्कृत विषय के अन्तर्गत 7 कक्षाओं में 21 व्याख्यान तथा खवर्ग संस्कृत के कक्षाओं में 14 विद्वानों के व्याख्यान आयोजित किये गये।

(2) सितम्बर, 2009 में पूर्व मध्यमा प्रथम व द्वितीय वर्षीय छात्रों के लिए एक मासिक संस्कृत प्रशिक्षण सत्र का आयोजन सार्वभौम संस्कृत प्रचार संस्थान, वाराणसी के सहयोग से किया गया।

(3) 20 सितम्बर, 2009 को " सामाजिकसौहार्दसम्वर्धने संस्कृतस्य योगदानम्" विषय पर संस्कृत भाषण प्रतियोगिता तथा निबन्धन लेखन प्रतियोगिता आयोजित की गयी।

डॉ. धर्मदत्त चतुर्वेदी

सेमिनार में सहभागिता तथा शोधपत्र प्रस्तुति-

(1) दिनांक 31 अक्टूबर, 2009, विक्रम विश्वविद्यालय, उज्जैन (म.प्र.) द्वारा आयोजित अखिल भारतीय कालिदास समारोह में "सामाजिकविसङ्गत्युन्मूलकं कालिदाससाहित्यम्" विषयक शोधपत्र प्रस्तुत किया गया।

(2) दिनांक 3 नवम्बर, 2009 को " शास्त्रार्थसम्मेलनम्", सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय में भाग लिया।

(3) दिनांक 11 से 13 दिसम्बर, 2009 को माता आनन्दमयी वैदिक पौराणिक शोधसंस्थान, नैमिषारण्य सीतापुर (उ.प्र.) द्वारा आयोजित राष्ट्रीय संगोष्ठी में " श्रीमद्भागवतबौद्धधर्मयोः कर्मवादविमर्शः" विषयक शोधपत्र प्रस्तुत किया।

(4) दिनांक 8 फरवरी, 2010 को बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय द्वारा आयोजित अन्तर्राष्ट्रीय संस्कृत साहित्य सम्मेलन में " मानवक्रौर्यं धर्षयितुं बौद्धजातकसाहित्यस्योपयोगित्वम्" विषयक निबन्ध प्रस्तुत किया।

(5) दिनांक 23-25 फरवरी, 2010 को संस्कृत विभाग, महात्मा गाँधी काशी विद्यापीठ, वाराणसी द्वारा आयोजित राष्ट्रीय संगोष्ठी में "आधुनिकसन्दर्भोचितं सीतासौन्दर्यमोहसमुत्थं रामायणम्" शीर्षक शोधपत्र प्रस्तुत किया।

कविसम्मेलनों में कविता पाठ-

(1) सितम्बर, 2009 में सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय द्वारा आयोजित कविसम्मेलन में कविता प्रस्तुत की गयी।

(2) 31 अक्टूबर, 2009 को विक्रम विश्वविद्यालय, उज्जैन में कालिदास विषयक कविता प्रस्तुत की गयी।

(3) 4 नवम्बर, 2009 को " अखिलभारतीयकविसमवायः" में संस्कृत कविता प्रस्तुति।

(4) 22 दिसम्बर, 2009 को संस्कृत विभाग, महात्मा गाँधी काशी

विद्यापीठ में प्रो. विद्यानिवास मिश्र की स्मृति में आयोजित कविसम्मेलन के अवसर पर कविता प्रस्तुति।

(5) 14 फरवरी, 2010 को संस्कृत विभाग, महात्मा गाँधी काशी विद्यापीठ में "कविसमवायः" के अवसर पर कविता प्रस्तुत की गयी।

व्याख्यान व अन्य विविध-

(1) मई 2009 को सार्वभौम संस्कृत प्रचार संस्थान, वाराणसी में ग्रीष्मकालीन संस्कृत प्रशिक्षण सत्र के उद्घाटन में मुख्य अतिथि के रूप में व्याख्यान दिया।

(2) 11 अगस्त, 2009 को संस्कृत सेवा साधना ग्रन्थ के लोकार्पण का कार्यक्रम आयोजित किया।

(3) दिनांक 23 फरवरी, 2010 को काञ्चीकामकोटिपीठ हनुमान घाट, वाराणसी में श्री जयेन्द्र सरस्वती शंकराचार्य के अमृतमहोत्सव में व्याख्यान दिया।

शोध निबन्ध एवं कविता का प्रकाशन-

(1) "आधुनिककौरवोपमदुष्प्रवृत्तिधर्षणाय पुनर्महाभारतावतरणापेक्षत्वम्" शीर्षकीय शोध-निबन्ध "भास्वती" पत्रिका महात्मा गाँधी काशी विद्यापीठ से प्रकाशित।

(2) "नाचरतात् त्वं शास्त्रविरुद्धम्" शीर्षक कविता श्रीविद्यान्यास द्वारा "चिकितुषी" पत्रिका में प्रकाशित।

(3) "पाणिनीयसारस्वतव्याकरणोक्तकारकप्रक्रियाविमर्शः" शीर्षक

शोध-निबन्ध "वाको वाक्यम्" पत्रिका (वाराणसी) में प्रकाशित।

(4) "कः संस्कृताराधकः" एवं " देववाणीपिरदेवनम्" शीर्षक कविता "गाण्डीवम्" वाराणसी में प्रकाशित।

(III) तिब्बती भाषा एवं साहित्य विभाग

(1) डॉ. टशी छेरिंग (टी) - उपाचार्य एवं अध्यक्ष

(2) भिक्षु ल्हक्पा छेरिंग - प्राध्यापक

शैक्षणिक गतिविधियाँ-

डॉ टशी छेरिंग (टी)

(1) दिनांक 17 से 20 नवम्बर, 2009 तक सराह तिब्बती उच्च अध्ययन महाविद्यालय, धर्मशाला (हि.प्र.) की ओर से आयोजित संगोष्ठी में भाग लिया तथा " एन एनालिटिकल स्टडी ऑफ वैरियस कमेन्ट्रीज़ ऑफ डिफाइनिंग लिटरेचर" विषयक शोधपत्र प्रस्तुत किया, जिसे सराह कालेज ने फरवरी, 2010 में प्रकाशित किया।

(2) " एन एनालिटिकल स्टडी ऑफ वैरियस डिफाइनिंग मोमेन्ट्स ऑफ द ओरिजिन ऑफ पोइट्री इन टिबेट" विषयक शोधपत्र लाइब्रेरी ऑफ टिबेटन वर्क्स एण्ड आर्काइब्स, धर्मशाला से प्रकाशित पत्रिका "तमछ़ोग" 28.2 में अप्रैल, 2009 को प्रकाशित हुआ।

(3) दिनांक 23 से 29 नवम्बर, 2009 तक पुनरुद्धार और अनुभाग विभाग की ओर से आयोजित प्रोफेसर रामकरण शर्मा के व्याख्यान में सम्मिलित हुआ।

(4) दिनांक 20-26 फरवरी, 2010 तक शिक्षा विभाग धर्मशाला द्वारा आयोजित केन्द्रीय विद्यालयों के अध्यापकों के लिए विश्वविद्यालय में आयोजित वर्कशाप में तीन व्याख्यान प्रदान किये।

भिक्षु ल्हक्पा छेरिंग

(1) दिनांक 17 से 20 नवम्बर, 2009 तक सराह तिब्बती उच्च अध्ययन महाविद्यालय, धर्मशाला (हि.प्र.) की ओर से आयोजित संगोष्ठी में भाग लिया तथा " इफेक्टिव मेथड्स ऑफ टीचिंग इन ए हायर स्टडीज" विषयक शोधपत्र प्रस्तुत किया, जिसे सराह कालेज ने फरवरी, 2010 में प्रकाशित किया।

(2) दिनांक 23 से 29 नवम्बर, 2009 तक पुनरुद्धार और अनुभाग विभाग की ओर से आयोजित प्रोफेसर रामकरण शर्मा के व्याख्यान में सम्मिलित हुआ।

(3) दिनांक 20-26 फरवरी, 2010 तक शिक्षा विभाग धर्मशाला द्वारा आयोजित केन्द्रीय विद्यालयों के अध्यापकों के लिए विश्वविद्यालय में आयोजित वर्कशाप में तीन व्याख्यान प्रदान किये।

(ग) आधुनिक विद्या संकाय

डॉ. देवराज सिंह - संकायाध्यक्ष

(I) समाजशास्त्र विभाग

(1) डॉ. बी.बी. चक्रवर्ती - उपाचार्य एवं अध्यक्ष (अर्थशास्त्र)

(2) डॉ. देवराज सिंह - उपाचार्य (अर्थशास्त्र)

(3) डॉ. उमेशचन्द्र सिंह - उपाचार्य (एशिया का इतिहास)

(4) डॉ. कौशलेश सिंह - उपाचार्य (एशिया का इतिहास)

(5) डॉ. एम.पी.एस. चन्देल - उपाचार्य (राजनीतिशास्त्र)

(6) डॉ. जम्पा समतेन - उपाचार्य (तिब्बती इतिहास)

(7) डॉ. अमित मिश्र - प्राध्यापक (राजनीतिशास्त्र)

(8) श्री उग्येन - अतिथि प्राध्यापक (तिब्बती इतिहास)

शैक्षणिक गतिविधियाँ-

डॉ देवराज सिंह

(1) दिनांक 29 से 31 अक्टूबर, 2009 को "स्टडी ऑफ इम्पेक्ट ऑफ वूमेन्स वर्क ऑन इन्टर-हाउसहोल्ड रिसोर्स एलोकेशन इन इस्टर्न एण्ड सेन्ट्रल उत्तर प्रदेश" विषय शोध योजना की प्रस्तुति के लिये विश्वविद्यालय अनुदान आयोग, नयी दिल्ली की यात्री की।

(2) दिनांक 11 जनवरी, 2010 को उदय प्रताप कालेज, वाराणसी में राजर्षि मेमोरियल व्याख्यानमाला में " इकोनामिक रिफोर्म्स एण्ड सोशल सेक्टर इन इण्डिया" विषय पर विशिष्ट व्याख्यान प्रदान किया।

(3) दिनांक 1 फरवरी, 2010 को विश्वविद्यालय में आये कोरियन छात्रों के लिये आयोजित कार्यशाला में उद्घाटन भाषण प्रदान किया।

(4) दिनांक 25 मार्च, 2010 को डी.ए.वी. कालेज, वाराणसी में "इज़ इण्डियन एकोनॉमी वेल? द रोल ऑफ एक्सटर्नल सेक्टर" विषय पर आयोजित राष्ट्रीय संगोष्ठी में की-नोट व्याख्यान दिया।

(5) दिनांक 26 मार्च, 2010 को अर्थशास्त्र विभाग, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय द्वारा " हिन्द स्वराज इन एकोनॉमिक पर्सपेक्टिव" विषय पर आयोजित राष्ट्रीय गोष्ठी में भाग लिया।

(6) दिनांक 27 मार्च, 2010 को अग्रसेन महिला महाविद्यालय, वाराणसी में "इंडियन एकोनॉमी एण्ड चैलेंजेस एहेड" विषय पर व्याख्यान दिया।

(7) दिनांक 27 मार्च, 2010 को विश्वविद्यालय में राजभाषा कार्यान्वयन समिति द्वारा "बदलते परिवेश में राजाभाषा की प्रासांगिकता" विषय पर आयोजित कार्याशाला की अध्यक्षता की।

(8) दिनांक 28 मार्च, 2010 को वाणिज्य विभाग, डी.ए.वी. कालेज, वाराणसी द्वारा "इनोवेटिव मैनेजमेंट प्रेक्टिस इन ग्लोब्लाइज्ड इरा" विषय पर आयोजित राष्ट्रीय सेमिनार में भाग लिया।

प्रकाशित निबन्ध :

"फाइव इयर प्लान्स एण्ड वूमेन इम्पावरमेंट; इशूज़ एण्ड ऑप्शन्स" नामक लेख यू.पी.यू.इ.ए. इकॉनामिक जर्नल भाग-5, नं. 5, 2009, पृ. 274-277 में प्रकाशित हुआ।

डॉ कौशलेश सिंह

(1) दिनांक 31 दिसम्बर, 2009 से 2 जनवरी, 2010 तक काशी हिन्दू विश्वविद्यालय में आयोजित नूमिस्मेटिक सोसायटी ऑफ इण्डिया के 93वें वार्षिक अधिवेशन में भाग लिया तथा "पूर्वी उत्तर प्रेदश पर कुषाण आधिपत्य" विषयक शोधपत्र प्रस्तुत किया।

(2) दिनांक 15-01-2010 से 18-01-2010 तक ज्ञानप्रवाह, वाराणसी में आयोजित "इन डेफ्थ स्टडी कोर्स आन कोइंस" विषयक व्याख्यान माला में विभागीय छात्रों के साथ भाग लिया।

(3) दिनांक 7-03-2010 को पुरातत्त्व सर्वेक्षण विभाग भारत सरकार एवं पुरातत्त्व संग्रहालय सारनाथ, वाराणसी द्वारा आयोजित राष्ट्रीय संगोष्ठी "सारनाथ : पास्ट, प्रजेन्ट एण्ड फ्यूचर" में भाग लिया।

डॉ. एम.पी.एस. चन्देल

(1) आलोच्य वर्ष में राजनीतिशास्त्र के छात्रों के लिए छह विशिष्ट व्याख्यानों का आयोजन किया।

(2) दिनांक 9 नवम्बर, 2009 को काशी हिन्दू विश्वविद्यालय में आयोजित गोष्ठी में "गवर्नेंस इन इण्डिया" विषयक लेख प्रस्तुत किया।

डॉ. उमेशचन्द्र सिंह

(1) दिनांक 30 सितम्बर, 2009 को यू.पी. कालेज, वाराणसी में आयोजित राजर्षि शताब्दी समारोह में भाग लिया।

(2) विश्वविद्यालय में आये यू.जी.सी. दल के सदस्यों के लिए सहायक के रूप कार्य किया तथा श्री बी.पी. सिंह के आगमन के अवसर पर सौंपे गये कार्यों को सम्पन्न किया।

(3) दिनांक 31 दिसम्बर, 2009 को बी.एच.यू. में सम्पन्न नूमिस्मेटिक सोसायटी ऑफ इण्डिया के शताब्दी समारोह में भाग लिया तथा "एन इन्ट्रोडक्शन एबाउट विगिनिंग ऑफ कोइनएज इन टिबेट" विषय पर शोधपत्र का वाचन किया।

डॉ. जम्पा समतेन

(1) दिनांक 27 अगस्त, 2009 को टिबेट स्टडी ग्रुप के द्वारा "कन्सेप्ट ऑफ ग्रेटर टिबेट" विषय पर आयोजित राउंड टेबल कान्फ्रेंस में भाग लिया तथा " टिबेटन पर्सपेक्टिव ऑन ग्रेटर टिबेट" विषय पर लेख प्रस्तुत किया।

(2) दिनांक 3 से 5 सितम्बर, 2009 को लाइब्रेरी ऑफ टिबेटन वर्क्स एण्ड आर्काइब्ज, धर्मशाला द्वारा "टिबेटन एण्ड हिमालयन स्टडीज" विषय पर आयोजित अन्तर्राष्ट्रीय कान्फ्रेंस में भाग लिया तथा "नोट्स ऑन द

थर्टीन्थ दलाई लामाज़ कान्फीडेंशियल लेटर टू त्सर ऑफ रशिया" विषय पर लेख प्रस्तुत किया।

(3) दिनांक 19 से 20 नवम्बर, 2009 को दिल्ली विश्वविद्यालय में विश्वविद्यालय एवं दिल्ली विश्वविद्यालय के साथ संयुक्त रूप से आयोजित " एक्सप्लोरिंग टिबेट्स हिस्ट्री एण्ड कल्चर" विषय पर आयोजित अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन का आयोजन किया और " टिबेट-नेपाल रिलेशन विद फोकस ऑन 1788-89 एण्ड 1791-92 ट्रीटी" विषय पर लेख प्रस्तुत किया।

डॉ. अमित मिश्र

(1) दिनांक 20 से 23 अगस्त, 2009 के मध्य विभागीय कक्षाओं के लिए विशेष व्याख्यान का आयोजन किया गया, जिसमें दिल्ली विश्वविद्यालय के राजनीतिशास्त्र विभाग के प्रो. प्रमोद मिश्र ने सम्बोधित किया।

(2) दिनांक 12 से 13 अक्टूबर, 2009 को बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय के राजनीतिशास्त्र विभाग की ओर से आयोजित राष्ट्रीय संगोष्ठी में भाग लिया तथा " रिफोर्म ऑन इंडियन एडमिनिस्ट्रेशन" विषयक निबन्ध प्रस्तुत किया।

(3) दिनांक से 17 से 18 नवम्बर, 2009 को बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय के मालवीय सेण्टर फॉर पीस रिसर्च द्वारा आयोजित अन्तर्राष्ट्रीय कार्यशाला "पीस एण्ड पीस एज्युकेशन" में भाग लिया।

(4) दिनांक 9 जून, 2009 को दिल्ली में दिल्ली विश्वविद्यालय और वांग डुंग विश्वविद्यालय इंडोनेशिया द्वारा संयुक्त रूप से आयोजित

अन्तर्राष्ट्रीय वर्कशाप "प्रोस्पेक्ट्स ऑफ फेड्रालिज्म : कम्परेटिव स्टडी" में भाग लिया।

(घ) शिल्प-विद्या संकाय

(1) श्री बुचुंग - अतिथि प्राध्यापक
(2) श्री जिग्मे - अतिथि प्राध्यापक
(3) प्रो. एस. देशपाण्डे - आचार्य (सेवानिवृत्त)
(4) सुश्री सुचिता शर्मा - अतिथि प्राध्यापिका
(5) श्री देछेन दोर्जे - अतिथि प्राध्यापक

(I) तिब्बती काष्ठकला विभाग

(II) तिब्बती चित्रकला विभाग

(ङ) सोवा रिग्-पा एवं भोट ज्योतिष संकाय

प्रो. लोब्संग तेन्जिन - संकायाध्यक्ष

(I) सोवा रिग्-पा विभाग

(1) डॉ. दोर्जे दमडुल - उपाचार्य एवं अध्यक्ष
(2) प्रो. लोब्संग तेन्जिन - आचार्य
(3) डॉ. ए.के. राय - अतिथि प्राध्यापक
(4) श्री वी.के. पाटिल - लैब टी.

विश्वविद्यालय का उद्देश्य तिब्बत की सांस्कृतिक विरासत, भाषा, साहित्य, दर्शन, धर्म और कला का संरक्षण तथा संवर्धन है। स्वास्थ्य रक्षण की प्राचीन तिब्बती परम्परा के संरक्षण-संवर्धन हेतु 1993 ई. में सोवा रिग्-पा विद्या

संकाय में सोवा रिग्-पा विज्ञान और ज्योतिषशास्त्र विभाग की स्थापना हुई। इस विभाग के निम्नलिखित उद्देश्य हैं-

- तिब्बती चिकित्सा विज्ञान का संरक्षण, संवर्धन तथा जनसामान्य एवं समाज को स्वास्थ्य सेवाएं प्रदान करना।
- निर्वासित तिब्बती युवा समाज, हिमालयाञ्चल निवासियों, इच्छुक विदेशी अध्येताओं एवं विद्यार्थियों को पढ़ाना, समझाना एवं चिकित्सकीय ज्ञान को प्रसारित करना।
- सम्प्रति यह विभाग छह इकाइयों (अनुभागों) के माध्यम से कार्य-सम्पादित कर रहा है- चिकित्सालय, शोध, औषधि निर्माणशाला, निदान प्रयोगशाला, पुस्तकालय एवं औषधि-उद्यान।

(1) शोध इकाई

(क) **विभाग द्वारा पूर्ण की गई योजनाएं-**

(1) उदर से सम्बन्धित रोगों के उपचार में भोट औषधियों का प्रभाव।

(2) हिपेटाइटिस एवं लिवर से सम्बन्धित रोगों का भोट औषधियों द्वारा उपचार।

(3) सोवा रिग्-पा पद्धति द्वारा मधुमेह की चिकित्सा।

(ख) **कार्याधीन योजनाएं-**

(1) ब्रोंकाइल अस्थमा का वैज्ञानिक शोध।

(2) मनो-दैहिक रोगों का तुलनात्मक अध्ययन।

(3) औषधि जड़ी रुता-6 (कुठ) का परीक्षण।

(4) डायबिटीज (मधुमेह) के रोगियों पर अंगूर एवं मेथी का प्रभाव।

(ग) अमेरिका के डॉ. लेसली आर. जेफ और विश्वविद्यालय के बी.टी.एम.एस. की छात्रा छेरिंग यूडोन द्वारा संयुक्त रूप से ' नारी स्वास्थ्य' पर शोध कार्य किया जा रहा है।

(घ) एक नई येजना ' ग्युद-ज्यी का तुलनात्मक अध्ययन' विषय पर कार्य प्रारम्भ किया गया है।

(ङ) 'द-शेल-दु-ची'- तिब्बती वानस्पतिक औषधि का औषध एवं निदान का मानकीकरण पर अध्ययन।

(2) चिकित्सालय

चिकित्सालय का मुख्य उद्देश्य विश्वविद्यालय के सोवा-रिगपा में अध्ययनरत छात्रों और इन्टर्नशिप करने वालों के लिए अभ्यास की सुविधा प्रदान करना तथा विश्वविद्यालय परिवार को चिकित्सा सुविधा प्रदान करना है। आलोच्य वर्ष में इस चिकित्सालय में लगभग 5412 से अधिक रोगियों का उपचार किया गया।

(3) औषध-उद्यान

कालचक्र औषध उद्यान की स्थापना विश्वविद्यालय परिसर में की गयी है। इस उद्यान का मुख्य उद्देश्य विद्यार्थियों को जड़ी-बूटियों का व्यावहारिक ज्ञान प्रदान करना तथा उच्च अध्ययन एवं शोध के लिए नये औषधियों को उपलब्ध कराना है। सम्प्रति इस उद्यान में लगभग 97 प्रकार की जड़ी-बूटियों के पौधे हैं।

(4) औषधि निर्माणशाला

औषधि निर्माणशाला में पारम्परिक नियमों एवं विधि-विधानों का सख्ती के साथ पालन करते हुए औषधियों का निर्माण किया जाता है।

औषधि निर्माण के लिए जड़ी-बूटियाँ स्थानीय बाजार एवं हिमालयी क्षेत्रों से मँगायी जाती हैं। सम्प्रति इस औषधि निर्माणशाला में छह अनुभवी दैनिक वेतनभोगी कर्मचारी कार्यरत हैं। यहाँ विभिन्न प्रकार की गोलियाँ, आसव, चूर्ण आदि तैयार होता है।

(5) निदान प्रयोगशाला

इस निदान प्रयोगशाला का मुख्य उद्देश्य विद्यार्थियों को आधुनिक तकनीक के माध्यम से रोगों की पहचान कराना है। आलोच्य वर्ष में लगभग 215 रोगियों का परीक्षण किया गया।

(6) विभागीय पुस्तकालय

विभाग में 'वागभट्ट पुस्तकालय' नाम से पुस्तकालय स्थापित है, जिसका उद्देश्य विभाग के विद्यार्थियों, शोधार्थियों, अध्यापकों के अध्ययन में सहायता प्रदान करना है।

नवीन शैक्षणिक गतिविधियाँ

1. सोवा-रिगपा में एम.डी/एम.एस. के लिये तिब्बती एवं अंग्रेजी में नियमावली तथा बी.टी.एम.एस. एवं पी.यू.सी. के लिये नियमावली का हिन्दी एवं तिब्बती में संशोधित रूप तैयार किया गया है।

2. 1 सितम्बर, 2009 से विश्वविद्यालय में प्रथम बार सोवा-रिगपा में एम.डी./एम.एस. पाठ्यक्रम प्रारम्भ किया गया।

विकासोन्मुख योजना

तवांग, अरुणाचल प्रदेश में स्थापित औषधीय उद्यान का विकास करना, जिसका उद्देश्य हिमालयी क्षेत्रों से विलुप्त हो रहे औषधीय पौधों का संरक्षण एवं उत्पादन करना है। समुद्रतल से लगभग 16000 फुट

ऊँचाई पर 5.47 एकड़ क्षेत्र को औषधीय उद्यान के रूप में विकसित करने का कार्य चल रहा है। इसके लिए भूमि लीस के आधार पर तवांग के स्थानीय लोगों ने दी है।

व्यावहारिक प्रशिक्षण कार्यक्रम

1. दिनांक 18.9.2009 से 15.10.2009 तक छ्रो-जे-दे-गु नामक विशिष्ट औषधि का विधि-विधान पूर्वक निर्माण करने का छात्रों को प्रशिक्षण दिया गया।
2. दिनांक 6 सितम्बर, 2009 को विशेष प्रायोगिक निर्देशों के आधार पर पूर्णिमा की रात्रि में 'छुङ-ज़ी-द-ओद' नामक औषधि का सविधि निर्माण एवं प्रशिक्षण दिया गया।

विशिष्ट व्याख्यानमाला

1. ' आधुनिक पैथालॉजी' – प्रो. इन्द्रमोहन गुप्ता, पूर्व संकायाध्यक्ष, आई.एम.ए., बी.एच.यू.।
2. ' ग्यानाकोलॉजी (प्रसूति विज्ञान) ' – डॉ. लेसली जेफ, स्मिथ कालेज, यू.एस.ए.।
3. ' कान का आकूपेंचर और आहार रिफलेक्सोल़ॉजी' – डॉ. विडल पस्कल, 27 जुलाई से 7 अगस्त, 2009
4. ' थाय-ची-चुआन' – श्रीमती विनेसा, फ्रान्स, 27 जुलाई से 7 अगस्त, 2009
5. ' सोवा रिग्-पा में चिकित्सालयी अभ्यास' – डॉ. पेमा दोर्जे, सलाहकार टी.एम.ए.आई., धर्मशाला, दिनांक 23.7.2009
6. ' पैथालॉजी' – डॉ. आर.के. मिश्र, 15.9.2009 से 30.4.2010

7. ‘ निदान प्रयोगशाला विज्ञान’ – डॉ. एल.बी. सिंह, 15.9.2009 से 30.4.2010
8. ‘ ग्यानाकोलॉजी’ – डॉ. शालिनी श्रीवास्तव, 15.9.2009 से 30.4.2010
9. ‘ सर्जरी’ – डॉ. पंकज श्रीवास्तव, 15.9.2009 से 30.4.2010
10. ‘ निदान-प्रयोगशाला विज्ञान’ – डॉ. ए.एन. सिंह, 15.9.2009 से 30.4.2010
11. ‘ मनो चिकित्सा’ – डॉ. जे.एस. त्रिपाठी, 15.9.2009 से 30.4.2010
12. ‘ साईको पैथालॉजी’ – डॉ. के.के. द्विवेदी, 15.9.2009 से 30.4.2010
13. ‘ शोधपद्धति’ – डॉ. गिरीश सिंह, 15.9.2009 से 30.4.2010
14. ‘ भोट-औषधि’ – डॉ. दावा डोलमा (परम पावन का वैयक्तिक चिकित्सक), एम.डी. के छात्रों के लिए दिनांक 1 से 30 दिसम्बर, 2009

औषधि प्रदर्शनी का आयोजन

6 से 9 दिसम्बर, 2009 को गाँधी मैदान, पटना में स्वास्थ्य और परिवार कल्याण मन्त्रालय के आयुष विभाग, विहार सरकार और फिक्की द्वारा आयोजित ‘कम्प्रेहेंसिव हेल्थ केयर फेयर’ (आरोग्य मेला) के अवसर पर ‘सोवा-रिगपा’ विभाग ने भोट औषधियों की प्रदर्शनी लगायी, जिसमें औषधियाँ, चित्र, ग्रन्थ एवं शल्यचिकित्सा से सम्बद्ध उपकरण एवं फार्मास्युटिकल उत्पाद प्रदर्शित किये गये, जिसे हजारों की संख्या में लोगों ने देखा।

(II) भोट ज्योतिष विभाग

(1) डॉ. टशी छेरिंग (जे) - उपाचार्य एवं अध्यक्ष

(2) श्री सुभाष पाण्डेय - अतिथि प्राध्यापक

(3) श्री जम्पा छोफेल - अतिथि प्राध्यापक

वार्षिक रिपोर्ट 2009-2010

शैक्षणिक कार्य-विवरण-

विशिष्ट व्याख्यानों का आयोजन

1. नवम्बर माह में श्री एडवर्ड हेननिंग का 'पाश्चात्य खगोल भौतिकी और भोट परम्परा से उसका तुलनात्मक अध्ययन' विषय पर तीन सप्ताह का व्याख्यान आयोजित किया गया।
2. दिसम्बर माह के अन्त में हैम्पशायर विश्वविद्यालय के प्रो. हग क्रॉल ने 'आधुनिक खगोल भौतिकी और अन्तरिक्ष विज्ञान' विषय पर तीन सप्ताह तक व्याख्यान प्रदान किया।

गोष्ठियों में सहभागिता

1. श्री जम्पा छोफेल ने नवनालन्दा महाविहार, नालन्दा द्वारा नवम्बर माह में आयोजित त्रि-दिवसीय संगोष्ठी में भाग लिया।
2. श्री जम्पा छोफेल ने अखिल भारतीय वैदिक सम्मेलन, बी.एच.यू. में मार्च माह में आयोजित गोष्ठी में भाग लिया तथा 'कालचक्र गणित' विषय पर व्याख्यान दिया।
3. सितम्बर, 2009 को विश्वविद्यालय के ज्योतिष विभाग के छात्रों ने सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय स्थित सूर्य के प्रकाश पर आधारित 'आवजरवेटरी' का अध्ययन किया तथा प्रशिक्षण प्राप्त किया और भारतीय खगोल शास्त्र का परिचय प्राप्त किया।

अध्ययन एवं शोध कार्य

विश्वविद्यालय के शोध विभाग में अनुवाद विभाग के सम्पादक भिक्षु एल.एन. शास्त्री के साथ ज्योतिष के ग्रन्थ 'शिखरबोध' के संस्कृत एवं भोट पाठ का अध्ययन एवं शोध किया जा रहा है।

3. शोध विभाग

प्राचीन लुप्तप्राय ग्रन्थों का पुनरुद्धार, सम्पादन तथा उनका सं॰ कृत, तिब्बती एवं हिन्दी भाषा में अनुवाद एवं प्रकाशन, विश्वविद्यालय का प्रमुख शोध एवं प्रकाशन कार्य है। पुनरुद्धार, अनुवाद, सम्पादन, संकलन एवं प्रकाशन, विश्वविद्यालय की प्रमुख शोध गतिविधियाँ हैं, जो निम्नलिखित विभागों द्वारा संचालित हैं–

1. **पुनरुद्धार विभाग**
2. **अनुवाद विभाग**
3. **दुर्लभ बौद्ध ग्रन्थ शोध विभाग**
4. **कोश विभाग**

1. पुनरुद्धार विभाग

तिब्बती भाषा में उपलब्ध प्राचीन भारतीय बौद्ध वाङ्मय को पुनः सं॰ कृत में उपलब्ध कराने हेतु इस विभाग की स्थापना हुई है। यह शोध विभाग का एक स्वतन्त्र विभाग है। इसका उद्देश्य न केवल शोध हेतु ग्रन्थों का पुनरुद्धार करना है, अपितु लुप्त प्राचीन भारतीय बौद्ध परम्परा को पुनर्जीवित करना भी है। विश्व में यह एकमात्र ऐसा विश्वविद्यालय है, जहाँ पर इस तरह का कार्य किया जा रहा है। इसमें प्राथमिकता के आधार पर आचार्य नागार्जुन, आर्यदेव, शान्तरक्षित, कमलशील एवं आचार्य अतीश के ग्रन्थों पर कार्य हो रहा है।

सं॰ कृत भाषा में उपलब्ध भारतीय बौद्ध वाङ्मय के तिब्बती भाषा में अनुवाद की 7वीं शताब्दी की परम्परा का अनुसरण करते हुए, इस विभाग के विद्वान्

आज भी सं॰ कृत भाषा के विद्वानों के साथ तिब्बती ग्रन्थों का सं॰ कृत में पुनरुद्धार कर रहे हैं।

प्राचीन समय में तिब्बती अनुवादकों के लिए बौद्ध दर्शन के भारतीय विद्वानों के साथ मिलकर कार्य करना आवश्यक था। इस परम्परानुसार विभाग के तिब्बती विद्वान्, बौद्ध दर्शन के भारतीय विद्वानों के साथ कार्य कर रहे हैं। विभाग के लिए यह गर्व का विषय है कि यहाँ राष्ट्रपति एवं पद्मश्री पुरस्कार से सम्मानित बौद्ध दर्शन के ख्याति-प्राप्त विद्वान् प्रो. रामशंकर त्रिपाठी जी तिब्बती विद्वानों के साथ कार्यरत हैं।

अब तक इस विभाग ने बौद्ध धर्म दर्शन के अनेक महत्त्वपूर्ण ग्रन्थों का पुनरुद्धार किया है। विभाग द्वारा प्रकाशित अनेक ग्रन्थ उत्तर प्रदेश सं॰ कृत अकादमी द्वारा पुरस्कृत भी हो चुके हैं।

विभाग में कार्यरत सदस्यों के नाम-

1. सम्पादक - रिक्त
2. सहायक सम्पादक - भिक्षु ज्ञलछेन नमडोल
3. सहायक सम्पादक - डॉ. पेन्पा दोर्जे (प्रभारी)
4. शोध सहायक - डॉ. लोब्संग दोर्जे
5. शोध सहायक - रिक्त

वर्तमान सत्र में विभाग की गतिविधियाँ निम्नवत् हैं-

(1) मुख्य कार्य-

लुप्त बौद्ध सं॰ कृत ग्रन्थों का तिब्बती भाषा से सं॰ कृत में पुनरुद्धार, शोध, अन्य बौद्ध ग्रन्थों का अनुवाद, सम्पादन, प्रकाशनार्थ कैमरा रेडी कॉपी तैयार

करना, अन्य शैक्षणिक कार्य तथा विजिटिंग शोध विद्वानों का सहयोग करना।

(क) वर्ष 2009-10 में पूर्ण एवं प्रकाशित ग्रन्थ

1. पिण्डीक्रम तथा पञ्चक्रम -

आलोच्य वर्ष में आचार्य ग्यलछन नमडोल ने भोट भाषा में आचार्य नागार्जुन रचित पिण्डीक्रम और पञ्चक्रम का सम्पादन, भूमिका एवं परिशिष्ट आदि तैयार कर प्रकाशन हेतु सौंप दिया गया है। सम्प्रति यह प्रेस में है।

2. न्यायबिन्दु धर्मोत्तर टीका सहित – धर्मकीर्ति कृत-

इस ग्रन्थ का हिन्दी अनुवाद प्रो. जी.सी. पाण्डेय ने किया है। डॉ. लोसंग दोर्जे रबलिंग ने इसके भोट पाठ का तथा श्री ठिनलेराम शाशनी ने संस्कृत पाठ का सम्पादन कर प्रकाशन हेतु तैयार किया है। सम्प्रति प्रकाशना- धीन है।

3. महाव्युत्पत्ति-(9वीं शताब्दी में भोट एवं भारतीय आचार्यों द्वारा प्रयुक्त बौद्ध पारिभाषिक शब्दों का कोश)

इसका डॉ. पेन्पा दोर्जे ने समीक्षात्मक सम्पादन किया है तथा साथ ही भूमिका एवं शब्द सूचियाँ भी तैयार कर ली गयी हैं और यह प्रेस में भेजने हेतु तैयार है।

(ख) कार्याधीन प्रमुख योजनाएँ

1. लम-रिम-छेनमो-

इसके द्वितीय भाग का हिन्दी अनुवाद पूर्ण कर लिया गया है तथा हिन्दी एवं भोटी में भूमिका तैयार की जा रही है। इस पर आचार्य ज्ञलछन नमडोल कार्य कर रहे हैं।

2. उत्पादक्रमसाधनसूत्रमेलापक-

आचार्य नागार्जुन कृत इस ग्रन्थ पर ज्ञलछन नमडोल कार्य कर रहे हैं। इसके हिन्दी अनुवाद तथा भोट पाठ का सम्पादन इत्यादि कार्य हो रहा है।

3. ज्ञानालोकसूत्र-

डॉ. पेन्पा दोर्जे इसके भोट पाठ का सं॰कृत पाठ के साथ मिला कर संस्करण-सम्पादन का कार्य कर रहे हैं।

4. प्रमाणविनिश्चयटीका - धर्मोत्तर कृत-

डॉ. पेन्पा दोर्जे एवं डॉ. लोसंग दोर्जे रबलिंग संयुक्त रूप से इस पर कार्य कर रहे हैं। आलोच्य वर्ष में इसे कम्प्यूटर में इनपुट कर लिया गया है तथा प्रथम प्रूफ-संशोधन सम्पन्न हो चुका है।

5. धर्मधातुस्तवः - आचार्य नागार्जुन कृत-

प्रकीर्ण रूप से प्राप्त अंश का सं॰कृत में पुनरुद्धार सम्पन्न कर लिया गया है तथा इस ग्रन्थ का हिन्दी एवं अंग्रेजी अनुवाद भी लगभग पूर्ण है। सम्प्रति डॉ. लोसंग दोर्जे रबलिंग इसकी भूमिका एवं परिशिष्ट इत्यादि तैयार करने में कार्यरत हैं।

6. बोधिपथप्रदीपपञ्जिका - दीपंकर श्रीज्ञान कृत -

डॉ. लोसंग दोर्जे रबलिंग एवं डॉ. पेमा तेनजिन इस ग्रन्थ पर संयुक्त रूप से कार्य कर रहे हैं। इसका सं॰ कृत में पुनरुद्धार कार्य पूर्ण कर लिया गया है।

7. आचार्य चन्द्रकीर्ति रचित युक्तिषष्टिकाटीका-

प्रो. रामशंकर त्रिपाठी एवं लोसंग दोर्जे रबलिंग संयुक्त रूप से इस योजना पर कार्य कर रहे हैं। अद्य यावत् इसका हिन्दी अनुवाद पूर्ण कर लिया गया है।

8. आचार्य चोंखापा कृत सुवर्णमाला-(अभिसमयालंकार की विशद व्याख्या)

डॉ. लोसंग दोर्जे रबलिंग इस कार्य को कर रहे हैं। प्रथम परिच्छेद का प्रूफ-संशोधन पूर्ण कर लिया गया है।

9. महायानोत्तरतन्त्र - असंग कृत-

पुनः सम्पादन योजना के अन्तर्गत तिब्बती पाठों का सं॰ कृत के साथ मिलान पूर्ण कर लिया गया है। प्रथम पटल तक पूर्ण कर लिया गया है।

10. रत्नकरण्डोद्घातने मध्यमकनामोदेश - अतीश कृत-

डॉ. पेन्पा दोर्जे इस ग्रन्थ पर कार्य कर रहे हैं। इसके भोट पाठ के संस्करण का कार्य प्रारम्भ हो चुका है। भोट संस्करण तैयार हो जाने के बाद इसके सं॰ कृत पुनरुद्धार की योजना है।

(2) अन्य शैक्षणिक कार्य-

1. **भावनायोगावतार**- विभागीय सदस्यों ने अनुवाद विभाग के साथ मिलकर संयुक्त रूप से पूना विश्वविद्यालय के प्रो. प्रदीप गोखले एवं प्रो. एस.एस. बहुलकर के सहयोग से इस ग्रन्थ का भोट से सं॰ कृत में

पुनरुद्धार किया तथा हिन्दी अनुवाद के साथ ‘ धीः’ शोध पत्रिका में प्रकाशित किया।

2. **बोधिचित्तोत्पादविधि**- आचार्य ञलछन नमडोल और डॉ. लोसंग दोर्जे रबलिंग ने संयुक्त रूप से आचार्य नागार्जुन रचित इस ग्रन्थ का पुनरुद्धार प्रो. गोखले एवं प्रो. बहुलकर के सहयोग से किया।
3. **भट्टारक चोंखापा सुमतिकीर्ति का संक्षिप्त स्वभावाभिधान**- साक्या परम्परा के प्रसिद्ध विद्वान् तगछङ् लोचावा द्वारा रचित इस ग्रन्थ का आचार्य ञलछन नमडोल ने हिन्दी अनुवाद किया तथा धीः 47 वें अंक में प्रकाशित हुआ।
4. **गुह्यसमाज प्रणिधान**- आचार्य ञलछन नमडोल ने आचार्य चोंखापा रचित इस ग्रन्थ का हिन्दी में अनुवाद किया तथा धीः 48वें अंक में प्रकाशित हुआ।
5. डॉ. लोसंग दोर्जे रबलिंग ने “प्रथम धर्मचक्रप्रवर्तन की समीक्षा” विषयक लेख तैयार किया जो शोध पत्रिका धीः के 48वें अंक में प्रकाशित हुआ।
6. डॉ. पेन्पा दोर्जे ने नवीं शताब्दी के विद्वानों द्वारा प्रयुक्त भोट पारिभाषिक शब्दों के योजना के सन्दर्भ में दिनांक 5-16 अक्टूबर, 2009 को लद्दाख विशेषकर करगिल क्षेत्र की यात्रा की तथा वहाँ के जीवन्त भाषा एवं बोलियों का संग्रह किया।

(3) अध्यापन-कार्य-

1. डॉ. पेन्पा दोर्जे ने जुलाई से सितम्बर, 2009 में इन्टरनेशनल इंस्टीच्यूट ऑफ टिबेटन स्टडीज, हटनवर्ग, आस्ट्रिया में तिब्बती भाषा का अध्यापन कार्य किया।

(4) संगोष्ठी एवं व्याख्यानों में सहभागिता-

1. विभाग के समस्त सदस्यों ने दिनांक 4-11-2009 को श्री बी.पी. सिंह के "इंडियाज कल्चर एण्ड बहुधा" और " पोस्ट 9.11" व्याख्यान, प्रो. रामकरण शर्मा द्वारा दिनांक 25-28 नवम्बर को प्रदत्त शोधपद्धति काव्यादर्श और छन्दशास्त्र पर व्याख्यान, प्रो. जम्पल द्वारा प्रदत्त व्याख्यान "प्रिजर्वेशन ऑफ टिबेटन लैंग्वेज", दिनांक 19-01-2010 को स्मिथ कालेज के प्रो. ग्रेगोरी द्वारा प्रदत्त " इमेजेस ऑफ इन्लायटन्मेन्ट इन द अवतंसक सूत्र" विषयक व्याख्यान एवं विश्वविद्यालय के अन्य शैक्षिक गतिविधियों में भाग लिया।
2. डॉ. पेन्पा दोर्जे ने दिनांक 21-23 दिसम्बर, 2009 को पूना विश्वविद्यालय में आयोजित अन्तर्राष्ट्रीय संगोष्ठी " बुद्धिस्ट टेक्स्ट एण्ड ट्रेडिशन" में भाग लिया तथा " तिब्बतन त्रिपिटक एण्ड इट्स डेवलपमेण्ट" विषय पर शोध पत्र प्रस्तुत किया।

(5) व्याख्यान एवं अन्य कार्य-

1. आचार्य ज्ञलछेन नमडोल और डॉ. लोसंग दोर्जे रबलिंग ने दिनांक 9-10 अक्तूबर को विश्वविद्यालय के एम.डी./एम.एस. के छात्रों को शोध पद्धति विषय पर व्याख्यान प्रदान किया तथा डॉ. पेन्पा दोर्जे ने कोरियाई अध्ययन कर्ता दल को दिनांक 3 फरवरी, 2010 को "चार आर्यसत्य" पर व्याख्यान दिया।

2. डॉ. लोसंग दोर्जे रबलिंग ने दिनांक 29 दिसम्बर, 2009 से 21 जनवरी 2010 तक अमेरिका एवं आस्ट्रेलिया के महाविद्यालयों से शैक्षिक आदान-प्रदान कार्यक्रम के अन्तर्गत आए विद्यार्थियों के लिए सहायक संयोजक का कार्य सम्पन्न किया।
3. डॉ. पेन्पा दोर्जे विश्वविद्यालय के वेव-साइट के विकास एवं निर्माण से सम्बद्ध कार्यों को देख रहे हैं।

(6) समिति के सदस्य-

1. डॉ. पेम्पा दोर्जे धर्मशाला स्थित सी.ए.टी. के शिक्षा विभाग द्वारा संचालित "न्यू टिबेटन टर्मिनोलॉजी" के सलाहकार सदस्य हैं। साथ ही डॉ. दोर्जे विश्वविद्यालय के प्रकाशन समिति और आवास आवंटन समिति के भी सदस्य हैं।

2. अनुवाद विभाग

अनुवाद विभाग, शोध विभाग का एक महत्त्वपूर्ण अंग है, जो बुद्ध वचन के साथ-साथ प्राचीन भारतीय बौद्ध आचार्यों एवं भोट आचार्यों द्वारा रचित अनेक ग्रन्थों के अनुवाद में संलग्न है। इस सातत्य में वज्रच्छेदिकाप्रज्ञापारमिताटीका, अतीश विरचित एकादश ग्रन्थ, कातन्त्रोणादिसूत्र, शतगाथा, छन्दोरत्नाकर, बोधिपथप्रदीप, सुहृल्लेखटीका आदि ग्रन्थों का पुनरुद्धार तथा मुक्तालतावदान, अभिसमयालंकारस्य कायव्यवस्थाटीका, नीतिशतकम्, अष्टाङ्गहृदयम्, सुहृल्लेखटीका, पूर्वयोगटिप्पणी, मिलारेपा का जीवन वृत्तान्त आदि का हिन्दी अनुवाद किया जा चुका है। इन सभी ग्रन्थों के प्रारम्भ में पृथक्-पृथक् हिन्दी, तिब्बती एवं अंग्रेजी भाषा में आवश्यकतानुसार समीक्षात्मक भूमिका एवं अनेक

सूचनाओं सहित ग्रन्थ के अन्त में उपयोगी परिशिष्ट भी दिया गया है। इसके अतिरिक्त विभाग समय-समय पर विश्वविद्यालय के दीर्घ एवं लघु शैक्षणिक क्रिया-कलापों में सक्रिय भूमिका निभाता है।

इस वर्ष अनुभाग ने पिछले वर्ष से चले आ रहे कुछ महत्त्वपूर्ण एवं बड़े ग्रन्थों जैसे- मृत्युवञ्चना, चरकसंहिता का तिब्बती में अनुवाद, कुनसङ् लामइ श्यल लुङ का हिन्दी अनुवाद, युक्तिषष्ठिकावृत्ति, बोधिपथप्रदीपपञ्जिका का संस्कृत में पुनरुद्धार, मध्यमकावतार एवं टीका के छठें परिच्छेद का हिन्दी अनुवाद एवं शीघ्रबोध का सम्पादन एवं अनुवाद आदि कार्य को निर्बाध गति से आगे बढ़ाया। सूत्रालङ्कार का हिन्दी अनुवाद शीघ्र ही प्रारम्भ किया जायेगा। इनके अतिरिक्त भी कुछ प्रसिद्ध विद्वानों द्वारा विरचित ऐसे ग्रन्थों के समीक्षात्मक सम्पादन का कार्य भावी योजना के अन्तर्गत लिया गया है, जो संस्कृत एवं तिब्बती दोनों भाषाओं में प्राप्त होते हैं, जैसे- तत्त्वसंग्रहपञ्जिका सहित, शिक्षासमुच्चय, बोधिचर्यावतार आदि।

विभाग में कार्यरत सदस्य एवं पदनाम-

1. सम्पादक - श्री लोब्सङ् नोर्बू शास्त्री
2. वरिष्ठ सहायक सम्पादक - डॉ. पेमा तेनजिन
3. शोध सहायक - डॉ. रामजी सिंह
4. शोध सहायक (संविदा) - श्री तेन्जिन कुन्सेल

1. अनुभाग द्वारा सम्पादित मुख्य कार्य

एक शोधपरक ग्रन्थ के प्रकाशनार्थ अनुभाग प्रमुख रूप से सम्पादन, संस्कृत-पुनरुद्धार, हिन्दी-अंग्रेजी अनुवाद, भाषा संशोधन, कम्प्यूटर-कम्पोजिंग, उद्धरणों एवं सन्दर्भों की खोज, समीक्षात्मक भूमिका लेखन,

पारिभाषिक शब्दों का कार्ड बनाना, विशेष परिस्थितियों में समस्या के समाधान के लिए विषय के विशेषज्ञ से सम्पर्क करना एवं पाठ-भेद का निर्धारण करना इत्यादि कार्यों में संलग्न रहता है।

(क) प्रकाशित ग्रन्थ-

1. **सुहृल्लेख (तिब्बती एवं हिन्दी भाषा में)**
2. **कुनसङ् लामइ श्यल-लुङ् (हिन्दी में)**

(ख) प्रमुख कार्याधीन योजनाएं-

1. **मृत्युवञ्चना** (सं॰ कृत, तिब्बती का सम्पादन एवं हिन्दी और अंग्रेजी अनुवाद)

   इस सत्र में ग्रन्थ के तिब्बती एवं सं॰ कृत पाठों के सम्पादन के साथ सम्पूर्ण ग्रन्थ का हिन्दी एवं अंग्रेजी अनुवाद भी पूर्ण कर लिया गया है तथा भूमिका लेखन व परिशिष्टों पर कार्य चल रहा है।

2. **शीघ्रबोध**

   आचार्य काशीनाथ कृत इस ग्रन्थ के पाँच सं॰ कृत पाण्डुलिपियों के संग्रह के अनन्तर पाठ-मिलान पूर्ण कर लिया गया है। सत्र के अन्त तक द्वितीय अध्याय की पाद-टिप्पणी पूर्ण कर ली गयी है तथा ज्योतिष विभाग के अध्यापक श्री जम्पा छोफेल के साथ अनूदित सं॰ कृत श्लोकों का तिब्बती भाषा में अनुवाद किया गया है।

3. **चरकसंहिता** (तिब्बती भाषा में अनुवाद)

   इस सत्र में चरकसंहिता, द्वितीय खण्ड (16-30 सूत्र-स्थान) के 20 वें परिच्छेद से पच्चीस पेजों का तिब्बती अनुवाद किया गया है।

4. **तत्त्वसंग्रह एवं पञ्जिका** (सं॰ कृत एवं तिब्बती का सम्पादन)

आचार्य शान्तरक्षित एवं आचार्य कमलशील कृत इस ग्रन्थ का सम्पादन का कार्य विश्वविद्यालय में चल रहे "बौद्ध संस्कृत ग्रन्थ सम्पादन योजना" के तहत प्रारम्भ किया गया, किन्तु अन्य कार्यों में व्यस्तता के चलते कार्य अवरुद्ध है।

5. **युक्तिषष्टिकावृत्ति** (संस्कृत पुनरुद्धार एवं हिन्दी अनुवाद)

आचार्य नागार्जुन कृत युक्तिषष्टिकाकारिका का भोटानुवाद से संस्कृत में पुनरुद्धार एवं हिन्दी अनुवाद किया जा चुका है। इसके अतिरिक्त ग्रन्थ की आचार्य चन्द्रकीर्ति विरचित वृत्ति का हिन्दी अनुवाद डॉ. पेमा तेनजिन एवं लोसङ् दोर्जे ने मिलकर सम्पन्न कर लिया है। सम्प्रति प्रो. रामशङ्कर त्रिपाठी जी टीका सहित हिन्दी अनुवाद का निरीक्षण कर रहे हैं।

6. **कुनसङ् लामइ श्यल लुङ्** (हिन्दी अनुवाद)

यह 19 वीं शताब्दी में तिब्बत में ञिङ्मा परम्परा के महान् साधक ज़ पटुल रिनपोछे कृत एक विशिष्ट उपयोगी एवं साधनापरक ग्रन्थ है। यह तन्त्र में प्रवेश हेतु पूर्वाभ्यास के रूप भिक्षुओं एवं गृहस्थों में अत्यन्त लोकप्रिय है तथा इसमें साधारण एवं असाधारण पूर्वयोग का पूर्ण विवरण है। अन्त में, 'उत्क्रान्ति योग' का विशेष वर्णन है, जो इस परम्परा की विशेषता है। यह कार्य पूर्ण कर दिया गया है।

7. **मध्यमकावतार एवं टीका** (छठाँ परिच्छेद का हिन्दी अनुवाद)

इस वर्ष आचार्य चन्द्रकीर्ति कृत ग्रन्थ का टीका सहित हिन्दी अनुवाद मोटे तौर पर समाप्त किया जा चुका है और उसके कम्प्यूटरीकरण का कार्य भी प्रगति पर है।

8. **महायानसूत्रसंग्रह** (प्रथम दो अध्याय का सं॰ कृत पुनरुद्धार तथा सम्पूर्ण ग्रन्थ का हिन्दी अनुवाद)

   सहायक सम्पादक डॉ. पेमा तेनजिन ने आचार्य असंग कृत इस ग्रन्थ के प्रथम एवं द्वितीय अध्याय का तिब्बती से सं॰ कृत भाषा में पुनरुद्धार का पुनः सम्पादन किया तथा इस सत्र में सम्पूर्ण ग्रन्थ के भोटपाठ का कम्प्यूटरीकरण के साथ पाठभेद और पाद-टिप्पणियों एवं सन्दर्भों पर कार्य किया गया।

9. **बोधिपथप्रदीपपञ्जिका** (हिन्दी अनुवाद एवं सं॰ कृत पुनरुद्धार)

   डॉ. पेमा तेनजिन ने डॉ. लोसङ् दोर्जे रबलिङ्, शोध सहायक, पुनरुद्धार विभाग के सहयोग से आचार्य दीपंकर कृत इस ग्रन्थ का हिन्दी अनुवाद पूर्ण कर लिया है। इस सत्र में ग्रन्थ के सं॰ कृत पुनरुद्धार का कार्य किया गया और पुनरुद्धृत सं॰ कृत पाठ का भोटपाठ से मिलान कर संशोधन का कार्य भी लगभग 30 पृष्ठ किया गया है।

10. **चन्द्रप्रभाजातकम्** (हिन्दी अनुवाद)

    ग्रन्थ का हिन्दी अनुवाद समाप्त हो चुका है। सम्प्रति भाषा संशोधन का कार्य चल रहा है।

11. **सिंहजातकम्** (हिन्दी अनुवाद)

    हिन्दी अनुवाद पूर्ण हो गया है। सम्प्रति भूमिका लेखन का कार्य चल रहा है।

2. प्रकाशित लेख-

वार्षिक रिपोर्ट 2009-2010

1. अनुभागाध्यक्ष श्री एल.एन. शास्त्री ने धर्मशाला, हिमाचल प्रदेश में 'इम्पोर्टेन्स ऑफ लैंग्वेज इन 21 सेन्चुरी' नामक विषय पर व्याख्यान दिया, जो तिब्बतन ग्रन्थ एवं अभिलेख पुस्तकालय, गड्छेन क्यिशोड्, धर्मशाला, कांगड़ा, हि.प्र. से 2010 में प्रकाशित है।
2. अनुभाग के अध्यक्ष श्री एल.एन. शास्त्री ने धर्मशाला, हिमाचल प्रदेश में 'दीप-पूजा तथा साष्टाङ्ग प्रणाम' नामक विषय पर व्याख्यान दिया, जो तिब्बतन ग्रन्थ एवं अभिलेख पुस्तकालय, गड्छेन क्यिशोड्, धर्मशाला, कांगड़ा, हि.प्र. से 2010 में प्रकाशित है।
3. डॉ. पेमा तेनजिन ने आचार्य कमलशील कृत एक लघु ग्रन्थ 'भावनायोगावतार' का सं॰ कृत पुनरुद्धार सहित हिन्दी अनुवाद का 'धीः-48' 2009 अक्टूबर माह में प्रकाशित किया।
4. ' तिब्बत में पूर्वानूदित सूत्र-तन्त्र परम्परा का परिचय-4' डॉ. पेमा तेनजिन द्वारा लिखित यह लेख 'धीः-48' 2009 में प्रकाशित हुआ।

3. वक्तव्य/भाषण-

1. भिक्षु एन.एन. शास्त्री ने संस्थान में पूर्वमध्यमा प्रथम वर्ष के छात्रों के लिए 4-6 सितम्बर, 2009 तक आयोजित त्रि-दिवसीय शिविर में 'शिविर का महत्त्व' एवं 'पर्यावरण का महत्त्व : कूड़े की व्यवस्था' नामक विषय पर व्याख्यान दिया।
2. डॉ. पेमा तेनजिन ने 6 सितम्बर, 2009 को संस्थान में छात्रकल्याण समिति द्वारा आयोजित पूर्वमध्यमा प्रथम वर्ष के शिविर में 'सं॰ कृत : महत्त्व एवं अध्ययन के उपाय' नामक विषय पर एक भाषण दिया।

3. अनुभाग के अध्यक्ष ने 29 सितम्बर, 2009 को अमेरिका से आये विदेशी छात्रों को 'बुद्धाज़ टीचिंग : फॉर नोबल ट्रुथ्स' नामक विषय पर व्याख्यान दिया।

4. अनुभाग के अध्यक्ष ने 2 अक्टूबर, 2009 को संस्थान में गाँधी जयन्ती समारोह का आयोजन किया जिसमें गाँधीवादी श्री सुनील सहस्रधर ने अपना वक्तव्य दिया, साथ ही संस्थान के कुलसचिव डॉ. देवराज सिंह के सहयोग से 150 विविध पौधों का वृक्षारोपण कार्य किया।

5. अनुभाग के अध्यक्ष ने सरह कालेज फार हायर तिबतन स्टडीज, कांगड़ा, हि.प्र. में 17-21 अक्टूबर, 2009 को ' प्रोसोडी एण्ड एनालिसिस ऑफ तिबतन प्रोसोडी' नामक विषय पर वक्तव्य सहित लेख भी प्रस्तुत किया।

6. अनुभाग के अध्यक्ष ने 1 जनवरी, 2009 को संस्कृति आदान-प्रदान के तहत प्रतिवर्ष की तरह अमेरिका एवं तस्मानिया विश्वविद्यालय, आस्ट्रेलिया से आये विदेशी छात्रों को 'चार आर्यसत्य' नामक विषय पर व्याख्यान दिया।

7. अनुभाग के अध्यक्ष ने 27 मार्च, 2010 को स्विस-जर्मन के एक दल को बुद्धिज्म और विश्वविद्यालय का परिचय दिया।

4. शोध निर्देशन-

अनुभागाध्यक्ष एल.एन. शास्त्री ने विश्वविद्यालय के अनेक छात्रों को अनुवाद एवं शोध कार्यों में सहायता की।

5. सेमिनार/कार्यशाला में सहभागिता-

1. अनुभाग के सदस्यों ने विश्वविद्यालय द्वारा 13-15 जनवरी 2010 तक 'इडिटिंग ऑफ बुद्धिस्ट संस्कृत टेक्स्ट' विषय पर आयोजित अन्तर्राष्ट्रीय कार्यशाला में सक्रिय रूप से भाग लिया तथा समय-समय पर विश्वविद्यालय में आयोजित विभिन्न व्याख्यानों में सक्रिय रूप से भाग लिया।

2. 29-30 मार्च, 2010 को अनुभाग के अध्यक्ष ने श्रमण विद्या संकाय, संस्कृत विश्वविद्यालय द्वारा 'बुद्धिज्म फिलासोफी एण्ड डॉ. भीमराव अम्बेडकर' नामक विषय पर आयोजित त्रि-दिवसीय सेमिनार में भाग लिया।

6. अध्यापन-कार्य एवं अनुवाद-

1. डॉ. पेमा तेनजिन उत्तरमध्यमा प्रथम वर्ष के छात्रों को अनिवार्य संस्कृत भाषा का अध्यापन हिन्दी एवं तिब्बती भाषा के माध्यम से कर रहे हैं।
2. डॉ. रामजी सिहं विगत पन्द्रह वर्षों से अध्यापन कार्य कर रहे हैं और वर्तमान सत्र में वे ख वर्ग-संस्कृत की चार कक्षाएं ले रहे हैं।
3. अनुभागाध्यक्ष श्री एन.एन. शास्त्री ने फ्रान्स से आये श्री थिकथोंग चुओंग तथा श्री थिक ट्रेंच को बौद्धधर्म का अध्यापन किया।
4. तेनजिन छ़ोमो को 'संस्कृत सुभाषित' के तिब्बती, हिन्दी एवं अंग्रेजी अनुवाद के लिए अप्रैल, 2009 से निर्देशन किया।
5. आचार्य प्रथम वर्ष के छात्र ञिमा शेरपा को 'शेरपाओं का इतिहास' के अंग्रेजी अनुवाद का सम्पादन कार्य किया।
6. शास्त्री प्रथम वर्ष की छात्रा कलसङ् वङ्मो को 'गादन लेगश्यद्' के हिन्दी एवं अंग्रेजी अनुवाद के लिए सहयोग किया।

7. आचार्य द्वितीय वर्ष की छात्रा खण्डो यांगजोम को ‘ सुभाषित मुक्तालता’ के हिन्दी एवं अंग्रेजी अनुवाद के लिए सहयोग दिया।
8. उत्तरमध्यमा द्वितीय वर्ष की छात्रा यङ्चेन सांगमो को साक्य पण्डित कृत ‘सुभाषितरत्ननिधि’ के हिन्दी अनुवाद के लिए निर्देशन किया।
9. आचार्य द्वितीय वर्ष की छात्रा फुरबु डोलमा को ‘बोन मातृसूत्र’ के अंग्रेजी अनुवाद के सम्पादन कार्य में सहयोग किया।

7. अतिरिक्त दायित्व-

1. अनुभागाध्यक्ष श्री एल. एन. शास्त्री ने 14-15 नवम्बर, 2009 को स्वयं सेवक छात्रों द्वारा काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय तथा काशी विद्यापीठ के प्रांगण में हिन्द स्वराज शिविर के आयोजन में सहयोग एवं दिशा-निर्देश किया।

8. अन्य शैक्षणिक क्रियाकलाप-

1. डॉ. पेमा तेनजिन ने 3 जनवरी, 2010 को संस्कृति आदान-प्रदान के तहत प्रतिवर्ष की भाँति अमेरिका एवं तस्मानिया विश्वविद्यालय, आस्ट्रेलिया से आये विदेशी छात्रों के लिए विज्ञानवाद पर दिये गये वक्तव्य का अंग्रेजी में अनुवाद किया।
2. डॉ. पेमा तेनजिन ने 23 फरवरी, 2010 को राजघाट स्थित बसन्त कालेज के कतिपय अध्यापक एवं छात्रों को भोट-संस्कृति, अनुवाद एवं वर्तमान राजनैतिक पहलू नामक विषय पर व्याख्यान दिया।

3. दुर्लभ बौद्ध ग्रन्थ शोध विभाग

1. विभाग एवं शैक्षणिक पृष्ठभूमि

क. परिकल्पना-

ऐतिहासिक विडम्बना के फलस्वरूप भारत से प्राचीन बौद्ध संस्कृत साहित्य का अधिकांश भाग प्रायः विलुप्त हो चुका था। भारत के इस प्राचीन सम्पदा का कुछ अंश भारत के पड़ोसी देशों विशेषकर नेपाल एवं तिब्बत में पाण्डुलिपियों के रूप में उपलब्ध हुए हैं। परवर्ती समय में इन देशों से अनेक पाण्डुलिपियाँ विश्व के अनेक पुस्तकालयों में पहुँच गयीं। उस विलुप्त साहित्य का विशेषकर बौद्धतन्त्र-साहित्य का पुनरुद्धार, सम्पादन, प्रकाशन तथा शोध की परिकल्पना की दृष्टि से इस विभाग की स्थापना की गयी थी।

ख. स्थापना-

दुर्लभ बौद्ध ग्रन्थों के शोध एवं प्रकाशन की इस अति महत्त्वपूर्ण एवं महत्त्वाकांक्षी योजना को मानव संसाधन विकास मन्त्रालय के सहयोग से इस विश्वविद्यालय में (तत्कालीन केन्द्रीय उच्च तिब्बती शिक्षा संस्थान, सारनाथ, वाराणसी) में नवम्बर, 1985 से प्रारम्भ किया गया था। प्रारम्भ में इसके कार्य-क्षेत्र एवं अध्ययन तथा शोध के आयामों के निर्धारण के लिये पाँच महीने का पायलट प्रोजेक्ट संचालित किया गया था। तत्पश्चात् इसकी उपलब्धियों, विषय की महत्ता एवं व्यापकता को दृष्टि में रखते हुए 1 अप्रैल, 1986 से इसे पंचवर्षीय योजना के रूप में संचालित किया गया, जिसे बाद में विश्वविद्यालय के स्थायी विभाग के रूप में स्वीकृत किया गया और सम्प्रति यह विभाग विश्वविद्यालय के शोध विभाग के अन्तर्गत स्थायी विभाग के रूप में कार्य कर रहा है। इस

शोध विभाग के प्रथम निदेशक एवं द्रष्टा स्व. प्रो. जगन्नाथ उपाध्याय थे।

ग. विभाग में कार्यरत सदस्य एवं पदनाम-

1. प्रधान सम्पादक - रिक्त
2. सम्पादक (एक पद) - रिक्त
3. सहायक सम्पादक (प्रभारी) - डॉ. ठाकुरसेन नेगी
4. सहायक सम्पादक - डॉ. बनारसी लाल
5. शोध-सहायक - श्री टी. आर. शाशनी
6. शोध-सहायक - डॉ. छोग दोर्जे (अवैतनिक अवकाश पर)
7. शोध-सहायक - डॉ. छेरिंग डोलकर
8. शोध-सहायक - डॉ. रञ्जन कुमार शर्मा
9. शोध-सहायक - डॉ. विजयराज वज्राचार्य
10. वरिष्ठ लिपिक - श्री सुनील कुमार मित्तल

2. शोध, प्रकाशन एवं सम्पादन कार्य

क. 1. शोध-पत्रिका 'धीः' का प्रकाशन

बौद्धतन्त्र से सम्बन्धित नवीन शोध कार्यों, उससे प्राप्त निष्कर्षों तथा हो रहे शोध कार्यों की नवीनतम सूचनाओं को विश्व के विद्वानों एवं शोधार्थियों तक पहुँचाने के लिये विभाग द्वारा ' धीः' नामक षाण्मासिक शोध-पत्रिका प्रकाशित की जाती है। विभाग के प्रारम्भ से अद्यावधि यह पत्रिका अविच्छन्न रूप से प्रकाशित हो रही है। बौद्ध अध्ययन विशेषकर बौद्धतन्त्रों के अध्ययन में संलग्न विद्वानों द्वारा इसकी भूरि-भूरि प्रशंसा हो रही है। देश-विदेश के अनेक शोध-पत्रिकाओं

के साथ सम्प्रति विश्वविद्यालय के पुस्तकालय में इसका विनिमय भी हो रहा है। इस पत्रिका के प्रायः सभी स्तम्भ एवं शोध-निबन्ध विभागीय सदस्यों द्वारा प्रस्तुत किये जाते हैं। प्रस्तावित आलोच्य वर्ष में इस शोध-पत्रिका के दो नवीन अंक प्रकाशित किये गये हैं।

2. **'धीः' शोध-पत्रिका के 47वें अंक का प्रकाशन**

इस शोध-पत्रिका 'धीः' के 47वें अंक का प्रकाशन अपने नियत समय दिनांक 9 मई, 2009 को बुद्ध-जयन्ती समारोह के अवसर पर कर दिया गया। इस अंक में 3 नवीन स्तोत्र, पत्रिका के स्थायी स्तम्भ, 6 शोध-निबन्ध तथा एक लघु ग्रन्थ सम्मिलित हैं।

3. **'धीः' शोध-पत्रिका के 48वें अंक का प्रकाशन**

इस शोध-पत्रिका 'धीः' के 48वें अंक का प्रकाशन अपने नियत समय कार्तिक पूर्णिमा दिनांक 2 नवम्बर, 2009 को कर दिया गया। इस अंक में भी पत्रिका के स्थायी स्तम्भ, 4 नये स्तोत्र सहित 4 शोध निबन्ध तथा 2 लघुग्रन्थ सम्मिलित हैं।

ख. लघुग्रन्थों का प्रकाशन

1. **रत्नगुणसञ्चयगाथाव्याख्या** (1-9 परिवर्त)

प्रज्ञापारमिता साहित्य में 'रत्नगुणसञ्चयगाथा' की अपनी विशेषता एवं महत्त्व है। परम्परानुसार इसे बुद्धवचन माना जाता है। सौभाग्य से आचार्य हरिभद्र की 'रत्नगुणसञ्चय' पर रचित यह व्याख्या हमें ताडपत्र में प्राप्त हुई। शोधकर्ताओं को यह ग्रन्थ उपलब्ध हो सके एतदर्थ, 'धीः' 47वें अंक से शोधपत्रिका में क्रमशः दिया जा रहा है।

तदनुसार 'धीः' 47वें अंक में प्रथम दो परिवर्त तथा 'धीः' 48वें अंक में तृतीय से नवम परिवर्त तक दिया गया है।

2. **गुह्यसमाजप्रदीपोद्योतनटीका** (1-2 पटल)

' गुह्यसमाजतन्त्र' पर आचार्य चन्द्रकीर्ति की 'प्रदीपोद्योतन टीका' पूर्व में प्रकाशित हो चुकी है। विभाग की ओर से एक मात्र पाण्डुलिपि एवं भोट-पाठ की सहायता से पुनः संशोधित संस्करण तैयार किया जा रहा है। आलोच्य अवधि में इसके प्रथम दो पटलों को शुद्ध कर 'धीः' शोध-पत्रिका के 48वें अंक में प्रकाशित कर दिया गया है।

ग. सम्पादन-कार्य

1. 'गुह्यसमाजप्रदीपोद्योतनषटकोटिव्याख्या' के तृतीय से षष्ठ पटल तक सम्पादित प्रूफों का संशोधन कार्य चल रहा है।
2. ' रत्नगुणसञ्चयगाथाव्याख्या' के 9 से 14 वें पटल तक का सम्पादन कार्य सम्पन्न किया गया।
3. ' धीः' 49वें अंक का सामग्री संकलन एवं सम्पादन कार्य चल रहा है।
4. ' गुह्यसमाजमण्डलविधि' (संस्कृत) का सम्पादन आदि कार्य सम्पन्न किया गया तथा (भोट संस्करण) के प्रूफ-संशोधन का कार्य चल रहा है।
5. ' दुर्लभ ग्रन्थों की आधार सामग्री' (भाग-4) के प्रूफ संशोधन, सम्पादन एवं ग्रन्थानुक्रमणिका का कार्य चल रहा है।

3. पाठ-मिलान कार्य

1. ' डाकार्णवमहायोगिनीतन्त्र' का ' क', ' ख' एवं ' घ' पाण्डुलिपियों से द्वितीय पटल तक पाठ मिलान कार्य सम्पन्न किया गया।

2. ‘ अभिषेकविधि’ का धर्मध्वनिपञ्जिका सहित ‘ क’ तथा ‘ ख’ पाण्डुलिपियों से पाठ मिलान कार्य चल रहा है।
3. ‘ चतुर्योगिनीनिर्देशतन्त्र’ का पाठ मिलान कार्य चल रहा है।
4. ‘ सम्पुटोद्भवतन्त्र’ के 11वें पटल का भोट संस्करण से पाठ मिलान कार्य चल रहा है।
5. ‘ हेवज्रसाधनोपायिका’ के पाठ-मिलान कार्य पूर्ण किया गया तथा संपादन कार्य चल रहा है।
6. ‘ डाकिनीवज्रपञ्जरपञ्जिका’ (भोट-पाठ)
7. ‘ गुह्यसमाजप्रदीपोद्योतनषट्कोटिव्याख्या’ के मूल (संस्कृत) का 7वें से 14वें पटल तक का मिलान कार्य सम्पन्न किया गया।
8. ‘ अद्वयवज्र’ विरचित 24 लघुग्रन्थों का ‘ ग’ पाण्डुलिपि से पाठ संकलन का कार्य चल रहा है।

4. विभिन्न पाण्डुलिपियों का देवनागरीकरण

1. चतुर्योगिनीनिर्देशतन्त्र (संवरोदयतन्त्र) (अपूर्ण)।
2. हेवज्रसाधनोपायिका का कुटिल लिपि से देवनागरीकरण।
3. अष्टमश्मशान का कुटिल से देवनागरीकरण।
4. डाकिनीवज्रपञ्जरततत्त्वविषदापञ्जिका 1 से 4 पटल तक।
5. डाकिनीवज्रपञ्जरटिप्पणी 1 से 13वें पटल तक।
6. डाकार्णव (म.म. हरप्रसाद शास्त्री) का 15 वें पटल (क) तक बंगला से देवनागरीकरण का कार्य सम्पन्न।
7. त्रिसमयराजटीका (अपूर्ण)।

5. कम्प्यूटर में डाटा इनपुट तथा प्रूफ रीडिंग

1. ‘ गुह्यसमाजप्रदीपोद्योतनटीका’ के 14वें पटल का कम्प्यूटर में इनपुट एवं सेटिंग का कार्य।
2. ‘ सर्वदुर्गतिपरिशोधनतन्त्र’ को कम्प्यूटर में इनपुट तथा सेटिंग का कार्य किया गया।
3. ‘ धीः’ 23, 27 से 43 अंकों में प्रकाशित लघुग्रन्थ संग्रह तथा स्तोत्रों को धीः के क्रमानुसार व्यवस्थित कर कम्प्यूटर में इनपुट किया गया।
4. ‘ सम्पुटतन्त्र’ (उत्तरतन्त्र) भोट संस्करणों के फुटनोट्स को कम्प्यूटर में इनपुट किया गया।
5. ‘ सम्पुटतन्त्र’ के 11वें पटल (निदान कल्प) का इनपुट कार्य।
6. ‘ गुह्यसमाजमण्डलविधि’ (भोट संस्करण) का कम्प्यूटर में संशोधित कर सेटिंग का कार्य किया जा रहा है।

6. दुर्लभ पाण्डुलिपियों के नवीन सूचनाओं का संकलन

आलोच्य वर्ष में देश-विदेश में प्रकाशित सूची-पत्रों के आधार पर लगभग 175 पाण्डुलिपियों का केटलाग कार्ड निर्मित किया गया।

7. ‘धीः’ शोध-पत्रिका में प्रकाशित शोध-पत्र

इस वर्ष में विभाग के सदस्यों के निम्नलिखित शोधपत्र प्रकाशित हुए-

1. धर्मश्रीमित्र का संक्षिप्त विवरण, डॉ. ठाकुरसेन नेगी, धीः 47
2. रत्नगुणसञ्चयगाथाव्याख्या : संक्षिप्त परिचय, डॉ. बनारसीलाल, धीः 47
3. बौद्ध साहित्यिक सम्पदा, श्री ठिनलेराम शाशनी, धीः 47

4. त्रिप्रत्ययात्मक गम्भीर मार्ग नरो(पाद) षड्धर्म-नय-क्रम (2), डॉ. छेरिंग डोलकर, धीः 47
5. दुर्लभ ग्रन्थों की आधार सामग्री, डॉ. ठाकुरसेन नेगी, धीः 48
6. बौद्ध पारिभाषिक शब्दों का अभिप्राय, श्री ठिनलेराम शाशनी, धीः 48

8. बुद्धजयन्ती का आयोजन

प्रति वर्ष की भाँति विश्वविद्यालय के प्रांगण में बुद्धजयन्ती का आयोजन दिनांक 9 मई, 2009 को किया गया तथा विभाग की ओर से प्रकाशित होने वाली शोध-पत्रिका 'धीः' के 47 वें अंक का बुद्धार्पण का कार्य सम्पन्न किया गया।

9. विभागीय पुस्तकालय

(1) दुर्लभ बौद्ध ग्रन्थ शोध विभाग में प्रारम्भ से ही पृथक् रूप से विभागीय पुस्तकालय की स्थापना की गई है, जिसमें विभाग के शोध को दृष्टि में रखकर प्राचीन एवं बौद्ध, शैव, शाक्त तथा अन्य तन्त्रों से सम्बन्धित महत्त्वपूर्ण तन्त्र साहित्य का संकलन किया जाता है। आलोच्य वर्ष तक इसमें कुल 2185 तन्त्र ग्रन्थ संग्रहीत हो चुके हैं।

(2) **वर्ष 2010 में नये ग्रन्थों का चयन तथा क्रय**

वर्ष 2010 में विभागीय पुस्तकालयों के लिए महत्त्वपूर्ण 61 ग्रन्थ क्रय किये गये तथा 19 ग्रन्थ विश्वविद्यालय के प्रकाशन विभाग से भेंट स्वरूप प्राप्त हुए। क्रय किये गये ग्रन्थों का मूल्य ₹22309.00 तथा भेंट स्वरूप प्राप्त ग्रन्थों का मूल्य ₹5580.00 है। इस प्रकार कुल 80 ग्रन्थ हैं, इनमें 1 भोट भाषा, 6 संस्कृत, 19 हिन्दी, 30 अंग्रेजी तथा 24 बहुभाषिक ग्रन्थ हैं। आलोच्य वर्ष में क्रय किये गये ग्रन्थों को

परिग्रहण पञ्जिका में क्रमानुसार क्रम सं. 2106 से 2185 तक में अंकित किया गया है।

10. अन्य शैक्षणिक कार्य एवं गतिविधियाँ

(क) विभाग के शोध-सहायक श्री ठिनलेराम शाशनी ने कुलपति महोदय के आदेशानुसार ' न्यायबिन्दु' (संस्कृत मूल) एवं धर्मोत्तर टीका का हिन्दी अनुवाद (प्रो. जी.सी. पाण्डेय) के ग्रन्थ का सम्पादन कार्य सम्पन्न किया।

(ख) विभाग के शोध-सहायक श्री ठिनलेराम शाशनी ने ' प्रकाश' नामक पत्रिका के लिये ' तिब्बत के धार्मिक एवं सांस्कृतिक संरक्षण में नयी पीढ़ी का दियत्व' विषय पर निबन्ध लिखा।

(ग) विभाग के सहायक सम्पादक डॉ. ठाकुरसेन नेगी द्वारा ' सामयिक - डुग प्रतिध्वनि' पत्रिका अंक 3 हेतु 'नरोपा के स्वप्न योग साधना' पर निबन्ध लिखा।

(घ) विभाग के सहायक सम्पादक डॉ. बनारसीलाल ने दिनांक 15-18 जून, 2009 को केन्द्रीय बौद्ध विद्या संस्थान, लेह द्वारा आयोजित संगोष्ठी पञ्चमहाविद्याओं में सम्मिलित हुए और ' भारत में पञ्चमहाविद्याओं के अध्ययन-अध्यापन एवं अनुशीलन की स्थिति' विषय पर निबन्ध प्रस्तुत किया।

(ङ) कुलपति महोदय के आदेशानुसार विभाग के शोध सहायक डॉ. विजयराज वज्राचार्य ' प्रमाणविनिश्चय टीका' का प्राचीन नेवारी से देवनागरीकरण करते हुए कम्प्यूटर में इनपुट का कार्य कर रहे हैं।

(च) विभाग के सहायक सम्पादक डॉ. बनारसीलाल ने दिनांक 6 से 7 अगस्त, 2009 को तवाङ (अरुणाचल प्रदेश) में आयोजित गोष्ठी में सम्मिलित हुए और 'भोटी भाषा से सम्बद्ध कुछ तथ्य एवं केन्द्रीय भोट अध्ययन विश्वविद्यालय में भोटी भाषा एवं साहित्य का पाठ्यक्रम' विषय पर लेख प्रस्तुत किया।

(छ) विभाग के शोध-सहायक श्री ठिनलेराम शाशनी ने आचार्य नागार्जुन विरचित सुहृल्लेख ग्रन्थ (भोट एवं हिन्दी सहित) का संपादन किया, जिसे लोक ज्योति बौद्ध विहार, गेमुर, हि.प्र. ने प्रकाशित किया।

(ज) विभाग की शोध-सहायक डॉ. छेरिंग डोलकर द्वारा बुस्तोन रचित 'तन्त्र की सामान्य एवं संक्षिप्त व्यवस्था' के हिन्दी अनुवाद का पुनः संशोधन एवं टिप्पणियों के अंकन का कार्य किया जा रहा है।

(झ) विभाग की शोध-सहायक डॉ. छेरिंग डोलकर द्वारा चोंखापा रचित 'त्रिप्रत्ययात्मक गम्भीर मार्ग तथा नरोपा षड्धर्म' का हिन्दी में अनुवाद कार्य चल रहा है।

(ञ) विभाग के सहायक सम्पादक डॉ. बनारसीलाल ने गुरुपद्मसम्भव ञिङमापा सभा, रिवालसर द्वारा आयोजित संगोष्ठी में प्रस्तुत शोध-पत्रों का सम्पादन कर ' गुरु-पद्मसम्भव' भाग-2 के रूप में गुरुपद्मसम्भव ञिङमापा बौद्ध सभा, रिवालसर, हि.प्र. से प्रकाशित किया।

(ट) डॉ. बनारसीलाल ने दिनांक 21-23 दिसम्बर, 2009 को पूना विश्वविद्यालय, शोध विभाग तिब्बती विश्वविद्यालय सारनाथ और नवनालन्दा महाविहार की ओर से आयोजित अन्तर्राष्ट्रीय गोष्ठी में

भाग लिया तथा ‘ गुह्यसमाजतन्त्र एवं उसकी परम्परा’ विषय पर निबन्ध का वाचन किया।

(ठ) विभाग के समस्त सदस्य दिनांक 13 से 15 फरवरी, 2010 को ‘एडिटिंग ऑफ बुद्धिस्ट संस्कृत मैन्युस्क्रिप्ट’ विषयक अन्तर्राष्ट्रीय कार्यशाला में सम्मिलित हुए।

(ड) विभाग के समस्त सदस्य दिनांक 18 से 19 जनवरी, 2010 को प्रो. पैटर ग्रेगरी, स्मिथ कालेज, अमेरिका द्वारा प्रदत्त ‘दि इम्पोर्टेन्स सूत्र इन द फार्मेशन ऑफ चाइनीज फिलॉसिफिकल स्कूल्स’ एवं दिनांक 19 जनवरी, 2010 को ‘ इमेज ऑफ इनलाइटमेंट इन दि अवतंसक सूत्र’ विषयक व्याख्या एवं अन्य शैक्षणिक गतिविधियों में सम्मिलित हुए।

(ढ) विभाग के सहायक सम्पादक डॉ. बनारसीलाल ने दिनांक 27 से 30 जनवरी, 2010 तक शाक्यमुनि तपस फाउण्डेशन द्वारा औरंगाबाद, महाराष्ट्र में आयोजित ‘ वज्रयान : दर्शन एवं साधना’ विषयक कार्यशाला में सम्मिलित हुए तथा उसमें अपने दो लेख ‘बौद्धतन्त्र का प्रवर्तन एवं लोक में प्रचार-प्रसार’ तथा ‘ गुरु पद्मसम्भव : जीवन एवं कृतित्व’ को प्रस्तुत किया।

(ण) विभाग के शोध-सहायक श्री ठिनलेराम शाशनी ‘महाकारुणिक बुद्ध एवं उनका सद्धर्म’ विषय पर लेख लिख रहे हैं।

4. कोश विभाग

कुछ दशक पहले जब महायानी बौद्ध परम्परा के प्रति विश्व-जनमानस में जिज्ञासा उत्पन्न हुई, तब इससे सम्बद्ध वाङ्मय तिब्बती, चीनी आदि प्राच्य भाषाओं तक ही सीमित था। महापण्डित राहुल सांकृत्यायन आदि के प्रयास

से कुछ संस्कृत ग्रन्थ पाठकों के सामने आए, किन्तु वे बहुत त्रुटिपूर्ण एवं अपूर्ण थे। उक्त स्थिति को देखते हुए तत्कालीन विद्वानों ने एक बृहत् कार्ययोजना तैयार की, जिसका मुख्य लक्ष्य इस प्रकार था–

1. उपलब्ध संस्कृत ग्रन्थों का परिष्कृत संस्करण तैयार करना,
2. विनष्ट संस्कृत ग्रन्थों को उनके तिब्बती अनुवाद की सहायता से पुनः अपने मूलरूप में प्रतिष्ठित करना,
3. प्राच्य भाषाओं में उपलब्ध सामग्रियों का उपयोग करते हुए उच्चस्तरीय शोध कार्य को प्रोत्साहित करना तथा
4. प्राचीन भाषाओं में उपलब्ध बौद्ध वाङ्मय को अर्वाचीन भाषाओं में सुलभ कराना।

इस महत्त्वाकांक्षी योजना के अन्तर्गत संपाद्य कार्यों को पूरा करने के लिए विभिन्न प्रकार के कोशों के निर्माण की आवश्यकता का अनुभव किया गया। तदनुसार केन्द्रीय तिब्बती अध्ययन विश्वविद्यालय, सारनाथ, वाराणसी ने एक बृहत् कोश-योजना तैयार की, जिसमें दो प्रकार के कोशों के निर्माण का प्रावधान है– सामान्य और विषयगत कोश। सामान्य कोश के अन्तर्गत विभाग ने भोट-संस्कृत कोश पर कार्य शुरू किया, जो 16 भागों में पूरा हुआ। उपलब्ध भोट-संस्कृत कोशों में यह सबसे बड़ा कोश है।

विभाग में कार्यरत सदस्य एवं पदनाम-

1. प्रधान सम्पादक - श्री जितासेन नेगी (30.9.2009 को निधन)
   डॉ. रमेशचन्द्र नेगी (कार्यकारी)
2. सम्पादक - रिक्त (प्रो. एस.एन. मिश्र, पुनर्नियोजित)
3. शोध सहायक - श्री टशी तोपग्यल

4. शोध सहायक - डॉ. लतामहेश देवकर
5. शोध सहायक (संविदा) - डॉ. टशी छेरिंग
6. शोध सहायक (संविदा) - श्री तेन्जिन नोर्बू
7. शोध सहायक (संविदा) - भिक्षु नवांग ग्यलछेन नेगी
8. शोध सहायक (संविदा) - श्रीमती लोब्संग छोडोन
9. शोध सहायक (संविदा) - डॉ. श्रीनिवास

प्रकाशित कोश

(1) भोट-सं॰ कृत कोश (16 भागों में), सन् 1993-2005

(2) धर्मसंग्रहकोश, सन् 2006

(3) भोट-सं॰ कृत सन्दर्भ-कोश, सन् 2008

निर्माणाधीन कोश

(1) आयुर्विज्ञान कोश

(2) भोट-सं॰ कृत कोश का डाटाबेस (सी.डी. रोम)

(3) भोट-सं॰ कृत कोश पी.डी.एफ.

(4) ज्योतिष कोश

(5) छात्रोपयोगी भोट-सं॰ कृत कोश

(6) सं॰ कृत-तिब्बती शब्दानुक्रमणिका

(7) भोट-संस्करणों का सन्दर्भ कोश

(8) विनय कोश

भावी योजना

(1) बौद्ध न्याय कोश

(2) बौद्धतन्त्र कोश

(3) नाम कोश (यह प्राचीन बौद्ध मनीषियों के परिचय सहित बौद्ध स्थलों से सम्बन्धित है)

(4) तिब्बती-हिन्दी कोश

(5) ग्रन्थ कोश

विभिन्न अन्य कार्य

1. तन्त्रकोश के पाठ-संकलन आदि तैयार करने के लिये 11 तिब्बती ग्रन्थों का कम्प्यूटर में इनपुट किया गया, अब तक लगभग 50 तिब्बती ग्रन्थों का इनपुट हो चुका है।
2. भोट-संस्कृत शब्दकोश के 16 भागों का सी.डी. वर्शन तैयार करने हेतु संशोधन आदि का कार्य चल रहा है।
3. ज्योतिष कोश का प्रथम चरण तैयार हो चुका है और वर्तमान में अतिरिक्त सामग्रियों को जोड़ने तथा प्रथम संशोधन कार्य चल रहा है।
4. आयुर्विज्ञान कोश के अन्तिम संशोधन का कार्य चल रहा है।

संगोष्ठी एवं निबन्धादि की प्रस्तुति

1. श्री तेनजिन नोर्बू और डॉ. टाशी छेरिङ् ने गुजरात विद्यापीठ एवं विश्वविद्यालय के द्वारा आयोजित बौद्धधर्म एवं हिन्द स्वराज नामक दस दिवसीय (2-11 अप्रैल, 2009) कार्यशाला का कार्यभार संभाला और नियमित रूप से कार्यशाला में भाग भी लिया।

2. डॉ. लता महेश देवकर ने क्योतो, जापान में हुए 14वें अन्तर्राष्ट्रीय संस्कृत संवाद में भाग लिया और ' सम ऑब्जर्वेशन आन बुद्धिज्म एण्ड लेक्सिकोग्राफी' नामक शोधपत्र पढ़ा।
3. श्रीमती लोबसङ् छोडोन ने ज्योतिष विभाग द्वारा आयोजित 'कलकुलस विदआउट लिमिट' नामक (22-28 सितम्बर, 2009) कार्यशाला के संचालन में सहायक थी तथा उक्त कार्यशाला में नियमित रूप से भाग लिया।
4. डॉ. लता महेश देवकर ने पालि विभाग, पूना विश्वविद्यालय, केन्द्रीय तिब्बती अध्ययन विश्वविद्यालय, सारनाथ तथा नवनालन्दा महाविहार, नालन्दा द्वारा संयुक्त रूप से आयोजित 'बुद्धिस्ट टेक्स्ट एण्ड ट्रेडिशन्स' विषय पर अन्तर्राष्ट्रीय संगोष्ठी में भाग लिया और 'इण्डियन रूट्स ऑफ बुद्धिस्ट लेक्सिकोन्स' नामक शोधपत्र पढ़ा।
5. विभाग के सदस्यों ने विश्वविद्यालय में आयोजित विभिन्न सेमिनार एवं वर्कशाप तथा आयोजित व्याख्यानों में भाग लिया
6. विभाग के सदस्यों ने विश्वविद्यालय के विभिन्न शैक्षणिक कार्यक्रमों के आयोजन में सौंपे गए कार्यों का निर्वहन किया।

4. शान्तरक्षित ग्रन्थालय

विश्वविद्यालय का शान्तरक्षित ग्रन्थालय देश में अपने प्रकार का विशिष्ट ग्रन्थालय है। इस ग्रन्थालय में प्राचीन सं॰कृत पाण्डुलिपियों के तिब्बती अनुवाद के रूप में भारतीय बौद्ध-वाङ्मय का समृद्ध संग्रह अपने मौलिक रूप में काष्ठोत्कीर्णत, मुद्रित एवं मल्टीमीडिया ग्रंथों के स्वरुप में विद्यमान है। ग्रन्थालय में विद्यमान ग्रन्थों का संग्रह विश्वविद्यालय के उद्देश्यों पर आधारित है, जिसे भारत सरकार द्वारा राष्ट्रीय महत्त्व का संग्रह घोषित किया गया है।

प्रसिद्ध भारतीय बौद्ध विद्वान् आचार्य शान्तरक्षित के नाम पर इस ग्रन्थालय का नामकरण हुआ है। बौद्ध-वाङ्मय की दृष्टि से यह अद्वितीय ग्रन्थालय है। इस ग्रन्थालय में संरक्षित बौद्ध, तिब्बती और हिमालयीय-अध्ययन के ग्रन्थों का समृद्ध संग्रह संसार-भर के विद्वानों के आकर्षण का केन्द्र है।

शान्तरक्षित ग्रन्थालय अत्याधुनिक सूचना तकनीकी सुविधाओं से सम्पन्न है तथा विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के अन्तर्विश्वविद्यालयी केन्द्र इनफ्लिब्नेट, अहमदाबाद द्वारा संचालित इन्फोनेट (ऑन लाइन जर्नल्स योजना) का सदस्य है, जिसके फलस्वरूप स्प्रिंगर से प्रकाशित ऑन लाइन जर्नल्स तथा आई. एस. आई. डी. और जे. सी. सी. सी. डेटाबेस ग्रन्थालय तथा विश्वविद्यालय के कैम्पस लैन पर मुफ्त में देखें, पढ़ें और डाउन-लोड किए जा सकते हैं। मुद्रित ग्रन्थों के अतिरिक्त संसार के विभिन्न ग्रन्थालयों एवं शोध केन्द्रों से प्राप्त सं॰कृत और तिब्बती बौद्ध वाङ्मय की पाण्डुलिपियाँ

माइक्रोफिच एवं माइक्रोफिल्म के रूप में ग्रन्थालय के वातानुकूलित कक्षों में सुरक्षित हैं। इस ग्रन्थालय के आठ अनुभाग हैं–

1. अवाप्ति एवं तकनीकी अनुभाग ।
2. सामयिकी, पत्र-पत्रिका, सन्दर्भ एवं इनफ्लिबनेट अनुभाग ।
3. तिब्बती अनुभाग।
4. आदान-प्रदान अनुभाग।
5. संचयागार अनुभाग।
6. मल्टीमीडिया अनुभाग ।
7. कम्प्यूटर अनुभाग।
8. भण्डार एवं अनुरक्षण अनुभाग।

1. अवाप्ति एवं तकनीकी अनुभाग

(1) ग्रंथ अवाप्ति

ग्रन्थालय के अवाप्ति अनुभाग द्वारा वर्ष 2009-10 में `16,38,403.00 मूल्य के कुल 2133 ग्रन्थों की अवाप्ति कर आगम संख्या 82053-84197 में पंजीकृत किया गया (परिग्रहण सं. 83691-83693, 84190-84193 & 84197 को छोड़कर) ।

कुल 2133 ग्रन्थों में से 1594 ग्रन्थ `14,68,988.34 में क्रय किये गये और `1,69,415.00 मूल्य के 488 ग्रंथ दानस्वरूप एवं विश्वविद्यालय-प्रकाशनों के विनिमय द्वारा प्राप्त हुए।

(क) ग्रन्थालय संग्रह में इस वर्ष जुड़े ग्रन्थों की भाषा क्रमवार तालिका-

भाषा	संख्या

तिब्बती	605
संस्कृत	32
हिन्दी	170
अंग्रेजी	1178
बहुभाषी	135
विदेशी भाषा	13
योग	**2133**

(ख) इस वर्ष ग्रन्थालय के संग्रह में 1000 ऑडियो विजुअल प्रलेख सम्मिलित हुए, जिन्हें आगम सं. 7858 से 8857 तक पंजीकृत किया गया। इनमें से `30,801.00 के 339 प्रलेख (ऑडियो, वीडियो कैसेट्स एवं सीडी रोम) क्रय किये गये तथा शेष 661 दान, विनिमय एवं विश्वविद्यालय में आयोजित विभिन्न शैक्षणिक कार्यक्रमों की रिकार्डिंग कर तैयार किये गये।

(2) तकनीकि अनुभाग

1. वर्ष 2009-10 में अनुभाग द्वारा कुल 1980 ग्रंथो का वर्गीकरण एवं सूचीकरण किया गया तथा डुप्लीकेट चेकिंग एवं स्लिम डेटाबेस में परिग्रहण आदि कार्यों में अवाप्ति अनुभाग की सहायता की गई।
2. वर्गांकों के यूनिफिकेशन तथा पाठकों द्वारा माँगे जाने पर ग्रंथो का त्वरित वर्गीकरण एवं सूचीकरण किया गया ।

संगोष्ठी एवं कार्यशाला में सहभागिता-

1. अनुभाग के प्रलेखन अधिकारी श्री राजेश कुमार मिश्र ने दिनांक 5-25 सितम्बर, 2009 तक एकेडमिक स्टाफ कालेज, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी द्वारा आयोजित ग्रन्थालय एवं सूचना विज्ञान के पुनश्चर्या कार्यक्रम में सम्मिलित हुए ।
2. श्री मिश्र दिनांक 8-9 अक्टूबर, 2009 तक केन्द्रीय ग्रन्थालय, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय द्वारा आयोजित "नेशनल सेमिनार ऑन राइट टु इन्फार्मेशन एण्ड लाइब्रेरीज" में सम्मिलित हुए तथा तत्विषयक अपना एक लेख प्रस्तुत किया ।
3. श्री मिश्र ने NKCCDS, भुवनेश्वर में आयोजित "नेशनल सेमिनार ऑन कैपिसिटी बिल्डिंग फार लाइब्रेरी प्रोफेशनल्स" हेतु " फाइनेन्शियल मैनेजमेण्ट ऑफ एकेडमिक लाइब्रेरीज" विषयक लेख भेजा ।
4. श्री मिश्र, दिनांक 29-30 मार्च, 2010 तक सचिवालय प्रशिक्षण तथा प्रबंध संस्थान, भारत सरकार, नई दिल्ली द्वारा आयोजित "सूचना का अधिकार अधिनियम 2005" विषयक कार्यशाला में भाग लिया ।

2. सामयिकी, पत्र-पत्रिका, सन्दर्भ एवं इनफ्लिबनेट अनुभाग

(क) अवाप्ति-

आलोच्य वर्ष में अनुभाग द्वारा सामयिकी एवं पत्र-पत्रिकाओं की अवाप्ति पर 1,74,053.69 व्यय किये गये, जिसका विवरण निम्नवत् है-

क्रम संख्या	सामयिकी व्यय	क्रय का प्रकार	शीर्षक	भाग	अंक	मूल्य ()
1.	विदेशी	क्रय	9	12	39	1,29,709.00

	सामयिकी					
2.	राष्ट्रीय सामयिकी	क्रय	23	36	88	7,965.35
3.	विनिमय सामयिकी	विनिमय	4	5	7	-
4.	आभार स्वरूप		6	8	21	-
5.	सामान्य पत्रिकाएं एवं समाचार पत्र		-	-	-	16,292.00
6.	न्यूज पेपर क्लिपिंग्स		-	-	-	20,087.34
	योग		**42**	**61**	**155**	**1,74,053.69**

(ख) सेवाएँ-

1. अनुभाग द्वारा अवाप्त किये गये शैक्षणिक जर्नल्स की 155 प्रतियों का पाठक सेवाओं हेतु प्रबन्धन किया गया।
2. जिल्दबन्द जर्नल्स के 33 शीर्षकों का सूचीकरण एवं ग्रन्थालय डेटाबेस में उनका निवेश किया गया।
3. वर्ष 2009-10 में 288 जर्नल्स आर्टिकल्स का सूचीकरण कर ग्रन्थालय डेटाबेस में उनका निवेश किया गया, जिसके फलस्वरूप ग्रन्थालय डेटाबेस में जर्नल्स आर्टिकल्स की कुल संख्या 12396 हो गई ।

3. तिब्बती अनुभाग

1. ग्रन्थालय के अवाप्ति अनुभाग द्वारा इस वर्ष क्रय किये गये तिब्बती भाषा के 605 ग्रन्थों का सूचीकरण एवं ग्रन्थालय डेटाबेस में उनका निवेश किया गया जिसके फलस्वरूप अनुभाग में पोथियों सहित ग्रंथों की कुल संख्या 22969 हो गई ।
2. अनुभाग द्वारा एशियन क्लासिक इनपुट प्रोजेक्ट, प्रो. येशे थपख्ये एवं संस्थान के शोध अनुभागों तथा शोध छात्रों को उनकी माँग के अनुसार विशेष ग्रन्थालय सेवाएँ प्रदान की गयीं तथा ।
3. वर्ष 2009-10 में पाठकों द्वारा तिब्बती अनुभाग के लगभग 4530 ग्रन्थों का निर्गमन कराया गया तथा प्रतिदिन औसतन 33 पाठक-सेवाएँ प्रदान की गयीं।
4. काष्ठोत्कीर्णित ग्रन्थों का जाँच एवं संरक्षण का कार्य किया गया।
5. अनुभाग द्वारा पाठक सेवाओं हेतु तिब्बती साहित्य एवं विभ्न्न विषयों की विषयवार ग्रन्थ सूचियाँ तैयार की गयीं ।

4. आदान-प्रदान अनुभाग

पंजीकृत पाठकों की संख्या-

विद्यार्थी 369

संकाय सदस्य एवं कर्मचारी 108

अन्य 84

योग 561

1. आलोच्य वर्ष में ग्रन्थालय में 561 सदस्यों का पंजीकरण/सदस्यता नवीनीकरण किया गया, जिनमें 369 विद्यार्थी, 108 संकाय सदस्य एवं विश्वविद्यालय के अधिकारी, कर्मचारी तथा शेष 84 अन्य सदस्य सम्मिलित हैं।
2. आदान, प्रदान, आरक्षण आदि से सम्बन्धित 19665 प्रविशिष्टयाँ ग्रन्थालय डेटाबेस में निवेशित की गयीं।
3. वर्ष 2008-09 में कुल 8563 ग्रन्थों का निर्गमन पाठकों द्वारा कराया गया तथा कुल 17034 पाठकों ने ग्रन्थालय का उपयोग किया।

5. संचयागार अनुभाग

संचयागार द्वारा प्रदान सेवाओं एवं रख-रखाव के कार्यों का विवरण निम्नलिखित तालिका में प्रस्तुत है-

(अ) सेवाएँ-

1.	संचयागार में आए पाठकों की संख्या (माँग पर्चियों की संख्या के आधार पर)	568
2.	फलक से निकाले गए ग्रन्थों की संख्या (माँग पर्चियों की संख्या के आधार पर)	1798
3.	अध्ययन-कक्ष से फलक पर व्यवस्थित किए गए ग्रन्थों की संख्या	26413

(ब) संग्रह में आए नए ग्रन्थ तथा संचयागार का रख-रखाव-

1.	संग्रह में आए नए ग्रन्थों की संख्या	2248
2.	तकनीकी सुधार हेतु निकाले गए ग्रन्थों की संख्या	170
3.	तकनीकी सुधार के पश्चात् संग्रह में आए पुराने ग्रन्थों की संख्या	170
4.	संग्रह संशोधन	a-z, P-Q 111
5.	ट्रांसक्राईब किए गए नए व पुराने ग्रन्थों की संख्या	2994
6.	जिल्दबंदी हेतु निकाले गए ग्रन्थों की संख्या	130

6. मल्टीमीडिया अनुभाग

ग्रन्थालय का मल्टीमीडिया अनुभाग, अत्याधुनिक तकनीकी सुविधाओं से सुसज्जित है। यह अनुभाग मल्टीमीडिया प्रलेखों की अवाप्ति, संग्रहण कर इन पर आधारित पाठक सेवाएँ प्रदान करता है।

आलोच्य वर्ष में अनुभाग के संगृह में सम्मिलित संपादित मल्टीमीडिया प्रलेखों का विवरण–

डीवीडी वीडियो 161 शीर्षक

वीसीडी 12 शीर्षक

एमपी-3 131 शीर्षक

एसीडी 33 शीर्षक

एसवीसीडी 2 शीर्षक

सीडी-रोम 13 शीर्षक

आडियो कैसेट 15 शीर्षक

कुल 367 शीर्षक

(I) आडिओ वीडियो प्रलेखन

आलोच्य वर्ष में विश्वविद्यालय में आयोजित विभिन्न कार्यक्रमों की वीडियो रिकार्डिंग कर निम्नलिखित मल्टीमीडिया प्रलेख अनुभाग के संग्रह में सम्मिलित किए गये-

(1) 'हिन्दस्वराज' पर आयोजित सेमिनार।

(2) विश्वविद्यालय की पत्रिका 'रिग्लब' के सदस्यों द्वारा आयोजित तीसरी रिग्लब कार्यशाला ।

(3) अन्तर्विषयी चिकित्सा पद्धतियों पर आयोजित गोष्ठी ।

(4) सं॰ कृत साहित्य और काव्यशास्त्र की ज्ञान परम्परा तथा चरक संहिता विषयक गोष्ठी ।

(5) बौद्ध सं॰ कृत ग्रंथों के संपादन पर आयेजित कार्यशाला ।

(6) तिब्बती भाषा पर आयोजित कार्यशाला ।

(7) कैल्कुलस विदआउट लिमिट विषयक कार्यशाला।

(8) ग्यल्वा करमापा रिनपोछे, प्रो. एस. रिनपोछे, डॉ. कपिला वात्स्यायन, डॉ. बी. के. सिंह आदि द्वारा दिए गए व्याख्यान ।

(II) स्टिल फोटो प्रलेखन

1. ताई-ची अभ्यास सत्र ।
2. ग्रीष्मावकाश शिविर
3. प्रो. एल. एम. जोशी स्मारक फुटबाल टूर्नामे ण्ट

4. यूनेस्को विश्वधरोहर समिति के सदस्यों का विश्वविद्यालय भ्रमण
5. रशियन प्रतिनिधियों का विश्वविद्यालय भ्रमण

(III) **डिजिटाइजेसन प्रोजेक्टस**

1. आलोच्य वर्ष में अनुभाग द्वारा 550 आडियो कैसेटों (69 शीर्षकों) का एमपी-3 फार्मेट में रुपान्तरण किया गया।
2. 564 सीडी का बैकअप तैयार किया गया।
3. कग्युर एवं तन्ग्युर के पीकिंग संस्करण (150 भाग) के डिजिटल संस्करण के संपादन का कार्य पूर्ण किया गया।
4. कग्युर एवं तन्ग्युर के पीकिंग संस्करण की बहुभाषी मुद्रित एवं पीडीएफ फार्मेट में सूची-पत्र बनाने का कार्य पूर्ण किया गया।
5. अनुभाग में संग्रहीत मल्टीमीडिया प्रलेखों की मुद्रित एवं पीडीएफ फार्मेट में सूची-पत्र बनाने का कार्य पूर्ण किया गया।

पाठक सेवाएँ-

1. वर्ष 2009-10 में अनुभाग द्वारा 88982 प्रतियाँ भुगतान पर एवं 226632 प्रतियाँ कार्यालयीय उपयोग के लिए फोटो-कॉपी की गयी।
2. वर्ष 2009-10 में अनुभाग द्वारा 1047 सीडी/वीसीडी एवं 65 आडियो कैसेटों की प्रतियाँ पाठकों के माँगे जाने पर तैयार की गईं ।
3. वर्ष 2009-10 में कुल 3800 पाठकों ने आडियो वीडियो प्रलेख सुनने देखने हेतु अनुभाग की सेवाएं प्राप्त की।

अनुभाग द्वारा संपादित अन्य कार्य –

1. श्री पेमा ग्यात्पो एवं श्री तेनजिन वांग्चुक ने अधुनातन मल्टीमीडिया यंत्रों के चयन हेतु नई दिल्ली का भ्रमण किया।

2. श्री पेमा ग्याल्पो ने तिब्बती बौद्ध हस्तलिखित ग्रंथों के सर्वेक्षण हेतु पूर्वोत्तर राज्यों का भ्रमण किया ।
3. श्री तेनजिन दोन्यो ने यूनेस्को विश्वधरोहर समिति के सदस्यों के विश्वविद्यालय भ्रमण के दौरान सम्पर्क अधिकारी का कार्य संपादित किया ।
4. अनुभाग ने शेरा-जे मोनेस्ट्री लाइब्रेरी के तीन सदस्यों को मल्टीमीडिया प्रलेखों के निर्माण, संरक्षण, प्रबन्धन आदि में प्रशिक्षित किया ।

7. कम्प्यूटर अनुभाग

(1) अनुभाग द्वारा विश्वविद्यालय के विद्यार्थियों, कर्मचारियों एवं अस्थायी सदस्यों को इण्टरनेट, वेब ओपेक, टेक्स्ट कम्पोजिंग एवं प्रिन्टिंग तथा अन्य कम्प्यूटर आधारित सेवाएँ प्रदान की जाती हैं।

(2) विश्वविद्यालय अनुदान आयोग की इन्फोनेट योजना के अन्तर्गत प्राप्त 512 के.बी.पी.एस. बैण्ड विथ की इण्टरनेट कनेक्टिविटी का विश्वविद्यालय के सदस्यों एवं विद्यार्थियों हेतु प्रबन्धन तथा रख-रखाव किया गया।

(3) ग्रन्थालय डेटाबेस हेतु प्रयुक्त साफ्टवेयर स्लिम के रख-रखाव एवं डेटाबेस बैक-अप तथा ग्रन्थालय में प्रयुक्त यू.पी.एस. के अनुरक्षण का कार्य सम्पादित किया गया।

(4) विश्वविद्यालय के अन्य अनुभागों द्वारा वाञ्छित कम्प्यूटर हार्डवेयर एवं साफ्टवेयर से सम्बन्धित सहायता प्रदान की गयी तथा 15 नए कम्प्यूटर क्रय किए गए ।

(5) अनुभाग कम्प्यूटर एप्लीकेशन डिप्लोमा/सर्टिफिकेट कोर्स के सैद्धान्तिक एवं प्रायोगिक कक्षाओं का सफलता-पूर्वक संचालन किया गया।

अन्य शैक्षणिक गतिविधियाँ-

अनुभाग के तकनीकी अधिकारी श्री जितेन्द्र सिंह ने अकादमी स्टाफ कालेज, देवी अहिल्या विश्वविद्यालय, इन्दौर द्वारा आयोजित अगस्त माह में आयोजित पुनश्चर्या कार्यक्रम में भाग लिया ।

8. भण्डार एवं अनुरक्षण अनुभाग

आलोच्य वर्ष 2009-10 में ग्रन्थालय सम्पत्ति के अनुरक्षण एवं क्रय पर विभिन्न मदों में किया गया व्यय–

क्र. सं.	**विवरण**	**धनराशि** (`)
1.	फर्नीचर्स-क्रय	6722.00
2.	अनुरक्षण-कार्य	226365.00
3.	स्टेशनरी-क्रय	393069.00
4.	कम्प्यूटर प्रिंटर यू.पी.एस. आदि	1191059.00
	कुल धनराशि (`)	**1817215.00**

अन्य गतिविधियाँ-

वार्षिक रिपोर्ट 2009-2010

1. प्रलेखन अधिकारी श्री मिश्र ने विश्वविद्यालय के जन सूचना अधिकारी का कार्य सम्पादित किया। आलोच्य वर्ष में तत्सम्बन्धी कुल 13 आवेदन प्राप्त कर निस्तारित किए गए ।
2. सहायक ग्रन्थालयाध्यक्ष श्री चन्द्रधरमणि त्रिपाठी ने विश्वविद्यालय की राजभाषा कार्यान्वयन समिति के सदस्य-सचिव का कार्य सम्पादित किया । आलोच्य वर्ष में तीन राजभाषा कार्यशालाएं आयोजित की गईं ।

5. प्रशासन

विश्वविद्यालय प्रशासन के मुख्यतः पाँच प्रमुख अंग हैं– सामान्य प्रशासन, कार्मिक प्रशासन, शैक्षणिक प्रशासन, वित्तीय प्रशासन एवं प्रकाशन विभाग। विश्वविद्यालय की प्रमुख प्रशासनिक गतिविधियों को निम्न संगठन चार्ट के अनुसार संचालित किया जाता है–

कुलपति

कुलसचिव

प्रशासन-1	**प्रशासन-2**	**परीक्षा अनुभाग**	**अनुरक्षण अनुभाग**	**वित्त अनुभाग**	**प्रकाशन विभाग**
• शैक्षणिक संवर्ग के कर्मचारियों की पत्रावलियों का रख-रखाव • संगोष्ठी, सम्मेलन तथा कार्यशाला • क्रय एवं अवाप्ति इकाई का पर्यवेक्षण • विश्वविद्यालय अनुदान आयोग से पत्राचार • शैक्षिक एवं शोध	• सभी शिक्षणेतर कर्मचारियों की पत्रावलियों का रख-रखाव • कार्मिक नीति • अस्थाई श्रमिकों की व्यवस्था • सभी	• परीक्षा संचालन हेतु प्रेलखन • परीक्षकों एवं संशोधकों की नियुक्ति • सारणीकरण • प्रश्नपत्र • परिणाम • प्रमाण-पत्र	• परिसर का रख-रखाव एवं सफाई • विद्युत एवं जल व्यवस्था • अतिथि-गृह • विद्युत एवं सिविल रख-	• बजट • लेखा परीक्षा • वेतन एवं मजदूरी का भुगतान • बिलों का भुगतान एवं अन्य	• भोट-बौद्ध दर्शन के शोधपरक पुनरुद्धार, अनुवाद, मौलिक, व्याख्यायित एवं सम्पादित ग्रन्थों का प्रकाशन • प्रूफ-रीडिंग का कार्य • प्रकाशित

प्रस्तावों/योजनाओं का प्रबंधन संचालन • अन्य शैक्षणिक संस्थाओं/निकायों से पत्राचार • शैक्षणिक एवं शोध सम्बन्धी मामलों में सचिवालयीय सहायता • अन्य प्रशासनिक मामले	संवर्ग की अस्थाई एवं तदर्थ नियुक्तियाँ • सेवा शर्तें • वैधानिक मामले • संस्कृति मंत्रालय से पत्राचार • कर्मचारी कल्याण • सुरक्षा • परिवहन • मानक प्रपत्र एवं उनका मुद्रण • अन्य प्रशासनिक मामले	एवं अंकपत्र जारी करना • परीक्षा से सम्बन्धित अन्य मामले	रखाव • बागवानी • केन्द्रीय भण्डारण एवं वस्तु-सूची • वार्षिक रख-रखाव संविदाएं • रख-रखाव सम्बन्धी अन्य मामले	वित्तीय मामले	ग्रन्थों का विक्रय

केन्द्रीय तिब्बती अध्ययन विश्वविद्यालय, सोसाइटी पंजीकरण अधिनियम द्वारा पंजीकृत एक मान्य विश्वविद्यालय है, जो संस्कृति मन्त्रालय, भारत सरकार से प्राप्त सहायता अनुदान से संचालित है। सोसायटी, प्रबन्ध परिषद्, विद्वत् परिषद्, वित्त समिति, ये चार विश्वविद्यालय के महत्त्वपूर्ण अंग

हैं। विश्वविद्यालय के प्रधान कार्यपालक अधिकारी कुलपति हैं, जो कुलसचिव के सहयोग से कार्य सम्पादित करते हैं।

विश्वविद्यालय के महत्त्वपूर्ण निकाय

सोसायटी- सोसायटी, विश्वविद्यालय का सर्वोपरि निकाय है। इसके पदेन अध्यक्ष, सचिव, संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार होते हैं। इसके सदस्यों की संख्या परिशिष्ट-2 में दी गई है।

प्रबन्ध परिषद्- विश्वविद्यालय के कुलपति, प्रबन्ध परिषद् के पदेन अध्यक्ष होते हैं। परिषद् के सदस्य, संस्कृति मन्त्रालय भारत सरकार, परम पावन दलाई लामा जी एवं विश्वविद्यालय के कुलपति द्वारा मनोनीत होते हैं। सदस्यों की सूची परिशिष्ट-3 में दी गयी है।

विद्वत् परिषद्- विश्वविद्यालय की विद्वत् परिषद् एक महत्त्वपूर्ण निकाय है, जो शैक्षणिक मामलों में दिशा-निर्देश करती है। विश्वविद्यालय के कुलपति, इसके भी पदेन अध्यक्ष होते हैं। सदस्यों की सूची परिशिष्ट-4 में दी गई है।

वित्त समिति- यह समिति विश्वविद्यालय के वित्तीय मामलों एवं अनुमानित बजट की संवीक्षा करने के साथ-साथ विश्वविद्यालय के लिए अनुदान की भी संस्तुति करती है। विश्वविद्यालय के कुलपति, इसके अध्यक्ष होते हैं। अन्य सदस्य, संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा नामित होते हैं। सदस्यों की सूची परिशिष्ट-5 में प्रस्तुत की गयी है।

विश्वविद्यालय को प्राप्त अनुदान

विश्वविद्यालय का प्रशासन अनुभाग मुख्यतः सामान्य प्रशासन, कार्मिक प्रशासन, शैक्षणिक प्रशासन एवं वित्तीय प्रशासन तथा सहायक सेवाओं का संचालन, रख-रखाव एवं नियंत्रण करता है। विश्वविद्यालय को वर्ष 2009-2010 में संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा निम्नलिखित अनुदान प्राप्त हुए–

गैर-योजना - ₹930 लाख

योजना - ₹530 लाख

इसके अतिरिक्त विश्वविद्यालय को विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा वर्ष 2009-10 में ₹150 लाख (ग्यारहवीं योजना) का अनुदान भी प्राप्त हुआ, जिसमें से ₹59.30 लाख व्यय किया गया।

प्रकाशन विभाग

प्रकाशन विभाग विश्वविद्यालय के उद्देश्यों के अनुसार भोट-बौद्ध दर्शन के शोधपरक ग्रन्थों का प्रकाशन एवं विक्रय करता है। विभाग से शोध-विषयक, पुनरुद्धार, अनुवाद, मौलिक, व्याख्यायित एवं सम्पादित ग्रन्थ प्रकाशित होते हैं।

विश्वविद्यालय द्वारा स्थापित व संचालित शोध विभाग एवं शोध योजनाएं ही प्रकाशन-सामग्री के मुख्य स्रोत हैं। इनसे समय-समय पर शोधग्रन्थ प्रकाशनार्थ उपलब्ध होते रहते हैं। बाहरी विद्वानों द्वारा भोट-बौद्ध दर्शन पर विरचित एवं सम्पादित शोध ग्रन्थों को भी प्रकाशित किया जाता है। प्रकाशित ग्रन्थों पर बाहरी विद्वानों को निर्धारित दर पर मानदेय प्रदान किया जाता है। अब तक प्रकाशित ग्रन्थों में मुख्य रूप से भोट-बौद्ध दर्शन के उच्चस्तरीय, बहुभाषी, शोधपरक, महत्त्वपूर्ण ग्रन्थ रहे हैं।

सम्प्रति निम्नलिखित ग्यारह ग्रन्थमालाओं के अन्तर्गत विश्वविद्यालय के ग्रन्थ प्रकाशित हो रहे हैं। इनके अतिरिक्त सन् 1986 से प्रारम्भ दुर्लभ बौद्ध ग्रन्थ शोध पत्रिका 'धीः' के अब तक 49 अंक प्रकाशित हो चुके हैं। कोश सीरीज के अन्तर्गत भोट संस्कृत कोश के अब तक सम्पूर्ण 16 अंक प्रकाशित हो चुके हैं। इसके अलावा कोश सीरीज द्वितीय एवं तृतीय के अन्तर्गत भी दो कोश ग्रन्थों का प्रकाशन किया गया है।

ग्रन्थमालाएँ-

ग्रन्थमालाओं के शीर्षक निम्नलिखित हैं-

(1) भोट-भारतीय ग्रन्थमाला।
(2) दलाई लामा भोट-भारती ग्रन्थमाला।
(3) सम्यक्-वाक् ग्रन्थमाला।
(4) सम्यक्-वाक् विशेष ग्रन्थमाला।
(5) व्याख्यान ग्रन्थमाला।
(6) दुर्लभ बौद्ध ग्रन्थ शोध ग्रन्थमाला।
(7) अवलोकितेश्वर ग्रन्थमाला।
(8) विविध-ग्रन्थमाला।
(9) 'धीः' दुर्लभ बौद्ध ग्रन्थ शोध-पत्रिका।
(10) कोश ग्रन्थमाला।
(11) भोट-मंगोलिया ग्रन्थमाला।

उपर्युक्त ग्यारह ग्रन्थमालाओं में विश्वविद्यालय के प्रकाशन मौलिक व्याख्यायुक्त, शोधपूर्ण बौद्धग्रन्थों का संस्कृत-पुनरुद्धार, अनुवाद, सम्पादन, हिन्दी, भोट, संस्कृत एवं आंग्ल भाषाओं में प्रकाशित हैं। पालि, अपभ्रंश एवं

चायनीज भाषा में कुछ ग्रन्थ मूल व अनुवाद रूप में प्रकाशित हैं। अधिकतर ग्रन्थों की भाषा मिश्रित (दो या दो से अधिक भाषाएं) हैं।

नये प्रकाशन

इस वर्ष निम्नलिखित नए ग्रन्थ प्रकाशित किए गए-

(1) 'धीः' दुर्लभ बौद्ध ग्रन्थ शोध पत्रिका, 47वाँ अंक ।

(2) 'धीः' दुर्लभ बौद्ध ग्रन्थ शोध पत्रिका, 48वाँ अंक ।

(3) बुद्धिज्म, वर्ल्ड कल्चर एण्ड ह्यूमन वैल्यूज, सम्पा.-प्रो. पवित्र कुमार रॉय।

(4) बुद्धकपालमहातन्त्रराज-टीका अभयपद्धति, सम्पा.-डॉ. छोग दोर्जे।

(5) वज्रयानदर्शनमीमांसा, प्रणेता-डॉ. वङ्छुग दोर्जे नेगी।

(6) गुरु समन्तभद्र मुखागम लोङ्छेन हृदयबिन्दु-पूर्वयोग व्याख्यान अनुवादक एवं सम्पादक-डॉ. पेमा तेनजिन।

(7) बौद्ध धर्म का परिचय - परम पावन दलाई लामा।

(8) वज्रच्छेदिका प्रज्ञापारमितासूत्र तथा आचार्य असङ्गकृत त्रिशतिकाकारिकासप्तति, सम्पादक एवं अनुवादक-

लालमणि जोशी।

विक्रय से प्राप्त धनराशि

इस वित्तीय वर्ष 2009-10 में प्रकाशित ग्रन्थों के विक्रय से इस विभाग ने `3,83,782.00 (` तीन लाख, तिरासी हजार, सात सौ बयासी) की धनराशि अर्जित की।

प्रकाशित ग्रन्थों का विनिमय

विश्वविद्यालय के प्रकाशनों का देश-विदेश के प्रकाशनों से विनिमय-वितरण किया जा रहा है। हमें 'प्रकाशन-विनिमय-योजना' के अन्तर्गत राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय स्तर के उपयोगी प्रकाशन प्राप्त होते हैं, जो विश्वविद्यालय के ग्रन्थालय में संग्रहीत कर, रखे जाते हैं तथा यहाँ के अध्ययन-अध्यापन में काफी उपयोगी होते हैं। सम्प्रति निम्नलिखित विश्वविद्यालयों से हमारे प्रकाशनों का आदान-प्रदान हो रहा है–

1. डेर यूनिवर्सिटेट, वियना, ऑस्ट्रिया ।
2. अन्तर्राष्ट्रीय बौद्ध अध्ययन संस्थान, टोकियो, जापान ।
3. इण्डिका एट टिबेटिका, वेरलाग, जर्मनी ।
4. हैम्बर्ग यूनिवर्सिटेट, हैम्बर्ग, जर्मनी ।
5. ड्रेपुंग लोसेलिंग लाइब्रेरी सोसायटी, मुण्डगोड, कर्नाटक ।
6. गादेन शार्त्से ड्राछ़ांग, मुन्डगोड, कर्नाटक।
7. अडयार लाइब्रेरी एण्ड रिसर्च सेण्टर, अडयार, चेन्नई ।
8. टिबेट हाउस, नई दिल्ली ।
9. आई. जी. एन. ए. सी., नई दिल्ली ।

विगत कई वर्षों से निम्नलिखित संस्थानों के प्रकाशन हमें विनिमय में प्राप्त नहीं हो पा रहे हैं। अतः जिन संस्थानों से विनिमय कार्य सम्प्रति रुक गया है, वे निम्नलिखित हैं–

1. इन्स्टीट्यूट फॉर ओरिएण्ट फोर्सचुंग, बर्लिन ।
2. पी. वी. शोध संस्थान, वाराणसी ।

सामान्य प्रकाशनों के विनिमय के अतिरिक्त राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय स्तर की शोध-पत्रिकाओं से भी हमारी शोध-पत्रिका 'धीः' का आदान-प्रदान वर्ष भर

किया गया। इस वर्ष लगभग पन्द्रह पत्रिकाएँ विनिमय योजना के अन्तर्गत प्राप्त हुई हैं।

प्रकाशन समिति

विश्वविद्यालय के प्रकाशनों के मुद्रण व प्रकाशन पर विचार-विमर्श व निर्णय करने हेतु एक उच्चस्तरीय प्रकाशन समिति है, जिसमें कुछ प्रकाशन विशेषज्ञ सदस्यों को रखा जाता है तथा शेष विश्वविद्यालय के विशिष्ट विद्वान् अधिकारी व विभागाध्यक्ष होते हैं। सम्प्रति इसमें कुल दस सदस्य हैं। विश्वविद्यालय के कुलपति इस समिति के अध्यक्ष होते हैं। विश्वविद्यालय अधिशासी बोर्ड द्वारा दिनांक 8.02.2010 को स्वीकृत नये सदस्यों की सूची परिशिष्ट-6 में दी गई है।

6. विद्यार्थियों की गतिविधियाँ

विश्वविद्यालय के विद्यार्थियों के सामुदायिक कार्य विश्वविद्यालय के नियमानुसार छात्र-कल्याण परिषद् (एस. डब्ल्यू. एफ. सी.) द्वारा संचालित किये जाते हैं। इस परिषद् की स्थापना 1972 में हुई थी। इसके सदस्यों का चुनाव लोकतांत्रिक ढंग से किया जाता है। वर्तमान, 38 वीं छात्र-कल्याण परिषद् के पदाधिकारी इस प्रकार हैं–

क्र.सं.	नाम	पद	कक्षा
1.	पेन्पा	अध्यक्ष	शास्त्री (तृतीय वर्ष)
2.	पेमा छेवाङ्	उपाध्यक्ष	शास्त्री (प्रथम वर्ष)
3.	रिन्छेन फुन्छोक	महासचिव	शास्त्री (द्वितीय वर्ष)
4.	छेरिंग फुन्छोक	कोषाध्यक्ष	शास्त्री (तृतीय वर्ष)
5.	तेनपा	सहायक कोषाध्यक्ष	शास्त्री (द्वितीय वर्ष)
6.	पलछेन वङ्ग्यल	संस्कृति सचिव	शास्त्री (द्वितीय वर्ष)

7.	लोसंग छोइडग	चिकित्सा प्रभारी	शास्त्री (तृतीय वर्ष)
8.	छोइंग तेनदर	शिक्षा सचिव	शास्त्री (द्वितीय वर्ष)
9.	सोनम वङग्यल	क्रीड़ा प्रभारी	शास्त्री (तृतीय वर्ष)

परिषद् के उद्देश्य

- विद्यार्थियों के कल्याण के निमित्त संसाधनों का प्रबन्ध करना।
- अतिरिक्त कक्षाओं, वाद-विवाद प्रतियोगिताओं, शिविरों आदि के आयोजन द्वारा विद्यार्थियों में रचनात्मक अभिरुचि एवं स्वस्थ शैक्षणिक परिस्थिति पैदा करना।
- भारतीय एवं विदेशी विद्वानों के व्याख्यान सम्पन्न कराना।
- विद्यार्थियों के लिए चिकित्सा एवं स्वास्थ्य सुविधाएँ उपलब्ध कराना।
- यक्ष्मा एवं अन्य गम्भीर रोगों से पीड़ित विद्यार्थियों को चिकित्सा हेतु आर्थिक सहायता की व्यवस्था करना।
- महत्त्वपूर्ण सम-सामयिक मुद्दों के प्रति विद्यार्थियों में जागरूकता पैदा करने के लिए उपयोगी साहित्य का सृजन, संग्रह एवं वितरण करना।

आयोजित कार्यक्रम

विद्यार्थियों की गतिविधियाँ

(1) दिनांक 10 अप्रैल, 2009 को प्रो. समदोङ् रिनपोछे जी का "हाउ द टिबेटन लैंग्वेज सिग्नीफाईज़ द टिबेटन एण्ड द वे ऑफ प्रिजर्विंग इट" विषय पर विशेष व्याख्यान का आयोजन किया गया।

(2) दिनांक 4 से 6 अप्रैल, 2009 तक पूर्वमध्यमा प्रथम वर्ष के छात्रों के लिए समर कैम्प का आयोजन किया गया, जिसमें भोट बौद्धधर्म के चारों सम्प्रदायों, उनकी भाषा एवं पर्यावरण इत्यादि विषयों का परिचय दिया गया।

(3) दिनांक 4 से 18 अक्टूबर, 2009 तक वरिष्ठ छात्रों के लिए शैक्षणिक यात्रा का आयोजन किया गया। इस वर्ष छात्रों ने भूटान की यात्री की और वहाँ के धर्म एवं संस्कृति से परिचित हुए।

(4) दिनांक 11 अप्रैल, 2009 को एच.आई.वी. और एड्स विषय पर छात्रों को जागरूक करने के लिए स्वास्थ्य विभाग, धर्मशाला से विशेषज्ञों को बुलाकर व्याख्यान दिया गया।

(5) दिनांक 5 से 15 जुलाई, 2009 को धर्मशाला में आयोजित फुटबाल टूर्नामेण्ट में विश्वविद्यालय का 14 सदस्यीय दल ने भाग लिया।

(6) दिनांक 5 से 15 अगस्त, 2009 तक विश्वविद्यालय में प्रो. लालमणि जोशी मेमोरियल फुटबाल टूर्नामेण्ट का आयोजन किया गया।

(7) दिनांक 24 फरवरी, 2010 को विश्वविद्यालय के वर्तमान छात्रों एवं प्राचीन छात्रों के मध्य परिचर्चा सत्र का आयोजन किया गया।

(8) दिनांक 26 फरवरी, 2010 को "निर्वासित तिब्बती सरकार की शिक्षानीति" विषय पर श्री छेरिंग समडुप, सचिव शिक्षा विभाग, धर्मशाला का व्याख्यान आयोजित किया।

(9) क्षेत्रीय छात्राओं के संगठन के साथ मिलकर दिनांक 12 मार्च, 2010 को अन्तर-कक्षाओं के बीच क्विज का आयोजन किया गया।

(10) दिनांक 25 मार्च, 2010 से प्रमाणशास्त्र पर पारम्परिक शास्त्रार्थ का आयोजन किया गया।

(11) दिनांक 8 मार्च, 2010 को श्री कर्मा मोनलम, श्री लोब्जंग ञेनडग और श्री डंगसोङ वंज्ञल का क्रमशः "परामर्श एवं अनुभव", "तिब्बती भाषा" और " बोन सम्प्रदाय का विशिष्ट दर्शन" विषय पर व्याख्यान आयोजित किया गया।

(12) दिनांक 15 मार्च, 2010 को लीडिंग छात्र क्लब के साथ मिलकर "निर्वासित सरकार का आगामी प्रधानमन्त्री कौन होगा?" विषय पर अन्तर-कक्षाओं के मध्य वाद-विवाद का आयोजन किया गया।

(13) दिनांक 7 से 9 मार्च, 2010 तक एस.डब्ल्यू.एफ.सी. द्वारा छात्रों के लिए चतुर्थ रिग्-लब कार्यशाला का आयोजन किया गया। जिसके भोट बौद्धधर्म एवं दर्शन से सम्बद्ध विषयों पर विशेषज्ञ विद्वानों का व्याख्यान हुआ तथा उन पर गहन विचार-विमर्श सम्पन्न हुआ।

नाट्य-कला छात्र संगठन-

नाट्य-कला छात्र संगठन की स्थापना विश्वविद्यालय में सन् 2004 में की गई थी। इसके संस्थापक एवं प्रथम अध्यक्ष श्री जिग्मे थे। इसके निम्मांकित उद्देश्य हैं-

(1) तिब्बत का सांस्कृतिक और पारम्परिक गीत एवं नृत्य का संरक्षण।

(2) हिमालयी क्षेत्र एवं तिब्बती छात्रों को वैकल्पिक नृत्य एवं उसके प्रदर्शन का अवसर प्रदान करना।

(3) विशिष्ट तिब्बती संस्कृति के विकास के लिए छात्रों को जागरूक करना।

(4) हिमालयी क्षेत्रों के विशिष्ट संस्कृति का संरक्षण करना।

(5) विभिन्न उत्सवों के अवसर पर सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन करना।

(6) नवीन पीढ़ी को तिब्बती संस्कृति का ज्ञान प्रदान करना।

परिशिष्ट-1

विश्वविद्यालय द्वारा आयोजित दीक्षान्त समारोह और उनमें मानद उपाधि से सम्मानित विशिष्ट विद्वानों की सूची

विशेष दीक्षान्त समारोह	परम पावन दलाई लामा	14-01-1990	वाचस्पति
पहला	1. श्री पी.वी. नरसिम्हा राव	19-02-1990	वाक्पति
	2. भिक्षु लोबुगामा लंकनन्दा महाथेरो, श्रीलंका	19-02-1990	वाक्पति
	3. भिक्षु खेनपो लामा गादेन, मंगोलिया	19-02-1990	वाक्पति
दूसरा	1. डॉ. राजा रमन्ना	15-07-1991	वाक्पति
	2. प्रो. जी.एम. बोनगार्ड लेविन, रूस	15-07-1991	वाक्पति
तीसरा	1. डॉ. जी. राम रेड्डी, चेयरमैन, यू.जी.सी.	08-04-1993	वाक्पति
	2. आचार्य तुलसी महाराज	08-04-1993	वाक्पति
चौथा	1. एच.एच. सक्या ठ्रिजिन रिनपोछे	16-04-1994	वाक्पति
पाँचवाँ	1. डॉ. एस.डी. शर्मा, राष्ट्रपति, भारत सरकार	21-08-1996	वाक्पति
		21-08-	वाक्पति

	2. प्रो.के. सच्चिदानन्द मूर्ति	1996	वाक्पति
	3. प्रो. रल्फ बूल्टी जीन, श्रीलंका	21-08-1996	
छठाँ	1. डॉ. ए.आर. किदवई, राज्यपाल, बिहार	5-01-1998	वाक्पति
	2. प्रो. जी.सी. पाण्डेय	5-01-1998	वाक्पति
सातवाँ	1. डॉ. कर्ण सिंह	27-12-1998	वाक्पति
	2. डॉ. (श्रीमती) कपिला वात्स्यायन	27-12-1998	वाक्पति
आठवाँ	1. प्रो. रामशरण शर्मा	31-10-1999	वाक्पति
	2. प्रो. रवीन्द्र कुमार	31-10-1999	वाक्पति
नवाँ	1. प्रो. डी.पी. चट्टोपाध्याय	25-12-2000	वाक्पति
	2. आचार्य एस.एन. गोयनका	25-12-2000	वाक्पति
दसवाँ	1. प्रो. विष्णुकान्त शास्त्री, राज्यपाल, उत्तर प्रदेश	29-12-2001	वाक्पति
		29-12-2001	वाक्पति
	2. प्रो. वी.आर. अनन्तमूर्ति	29-12-2001	वाक्पति
	3. गादेन ठ्रि रिनपोछे लोब्संग ञीमा	29-12-2001	वाक्पति
	4. डॉ. किरीट जोशी		
ग्यारहवाँ	1. प्रो. मुरली मनोहर जोशी, मानव संसाधन विकास मंत्री, भारत सरकार	09-03-2003	वाक्पति
		09-03-2003	वाक्पति

	2. प्रो. डेविड सेफॉर्ड रूइग, इंग्लैण्ड		
बारहवाँ	1. श्री बलराम नन्दा	18-02-2005	वाक्पति
	2. श्री जे.एस. वर्मा, न्यायाधीश	18-02-2005	वाक्पति
तेरहवाँ	1. डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम पूर्व राष्ट्रपति, भारत सरकार	06-03-2008	वाक्पति
	2. प्रो. सुलक शिवरक्श	06-03-2008	वाक्पति

परिशिष्ट-2

सोसायटी के सदस्य (दिनांक 31-3-2010)

क्र.सं.	नाम	पद
1.	श्री जवाहर सरकार (आई.ए.एस) सचिव, संस्कृति मन्त्रालय, भारत सरकार, शास्त्री भवन, नई दिल्ली।	अध्यक्ष
2.	प्रो. गेशे ङवङ् समतेन, कुलपति केन्द्रीय तिब्बती अध्ययन विश्वविद्यालय, सारनाथ, वाराणसी।	सदस्य
3.	संयुक्त सचिव संस्कृति मन्त्रालय, संस्कृति विभाग, शास्त्री भवन, नई दिल्ली।	सदस्य
4.	प्रो. वाई. सी. सिम्हाद्रि, कुलपति आन्ध्र विश्वविद्यालय, विशाखापट्टनम (आन्ध्र प्रदेश)।	सदस्य
5.	प्रो. बी. एन. सरस्वती निर्मल कुमार बोस मेमोरियल फाउण्डेशन, बी-8/9, बाड़ा गम्भीर सिंह, वाराणसी-221001 ।	सदस्य
6.	भिक्षु दोबुम टुल्कू, निदेशक	सदस्य

टिबेट हाऊस, 1, इन्स्टीट्यूशनल एरिया,
लोधी रोड, नई दिल्ली।

7. प्रो. कृष्णनाथ — सदस्य
कृष्णमूर्ति फाउण्डेशन इण्डिया, हरिद्वानम्
थाटगुणी, बंगलोर।

8. प्रो. वाचस्पति उपाध्याय, कुलपति — सदस्य
श्री लालबहादुर शास्त्री राष्ट्रीय संस्कृत विद्यापीठ,
कटवरिया सराय, नई दिल्ली।

9. प्रो. डी. पी. सिंह, कुलपति — सदस्य
काशी हिन्दू विश्वविद्यालय,
वाराणसी-221005

10. भिक्षु छेरिंग फुनछोक, मंत्री (कालोन) — सदस्य
धर्म और संस्कृति विभाग,
केन्द्रीय तिब्बती प्रशासन, गंगछेन क्यिशोंग,
धर्मशाला (हिमाचल प्रदेश)-176215 ।

11. सचिव — सदस्य
धर्म और संस्कृति विभाग,
केन्द्रीय तिब्बती प्रशासन, गंगछेन क्यिशोंग,
धर्मशाला (हिमाचल प्रदेश)-176215 ।

12. श्री संजय पण्डा, निदेशक (चीन/पूर्व एशिया) — सदस्य
मिनिस्ट्री ऑफ एक्सटर्नल अफेयर्स,
साउथ ब्लॉक, नई दिल्ली-110011 ।

13. प्रो. एस. डी. मुनि — सदस्य
जे.-1176, अन्सल्स पालम विहार,
गुड़गाँव, हरियाणा।

14. प्रो. लोब्संग तेनज़िन, संकायाध्यक्ष — सदस्य
तिब्बती चिकित्सा विद्या विभाग,
केन्द्रीय तिब्बती अध्ययन विश्वविद्यालय,
सारनाथ, वाराणसी ।

15. डॉ. बी. बी. चक्रवर्ती, उपाचार्य (अर्थशास्त्र) — सदस्य
केन्द्रीय तिब्बती अध्ययन विश्वविद्यालय,
सारनाथ, वाराणसी ।

16. डॉ. फुनछोक दोन्डुप, उपाचार्य (मूलशास्त्र) — सदस्य
केन्द्रीय तिब्बती अध्ययन विश्वविद्यालय,
सारनाथ, वाराणसी ।

17. डॉ. देवराज सिंह — सदस्य-सचिव
सचिव एवं कुलसचिव,
केन्द्रीय तिब्बती अध्ययन विश्वविद्यालय,
सारनाथ, वाराणसी ।

परिशिष्ट-3

अधिशासी बोर्ड के सदस्य (दिनांक 31-3-2010)

क्र.सं.	नाम	पद
1.	प्रो. गेशे ङवङ् समतेन, कुलपति केन्द्रीय तिब्बती अध्ययन विश्वविद्यालय, सारनाथ, वाराणसी।	अध्यक्ष
2.	श्री लव वर्मा (आई.ए.एस.) संयुक्त सचिव, भारत सरकार, संस्कृति मन्त्रालय, शास्त्री भवन, नई दिल्ली।	सदस्य
3.	श्री छेरिंग फुनछोक, कालोन धर्म और संस्कृति विभाग, केन्द्रीय तिब्बती प्रशासन, गंगछेन क्यिशोंग, धर्मशाला-176215, जिला-कांगड़ा, (हिमाचल प्रदेश)।	सदस्य
4.	निदेशक/प्राचार्य केन्द्रीय बौद्ध विद्या संस्थान, चोगलमसर, लेह, लद्दाख (जम्मू एवं कश्मीर)।	सदस्य
5.	श्री संजय पण्डा, निदेशक (चीन) भारत सरकार, मिनिस्ट्री ऑफ एक्सटर्नल अफेयर्स, नई दिल्ली।	सदस्य

6.	निदेशक/उपसचिव (वित्त) भारत सरकार, संस्कृति मन्त्रालय (आई.एफ.डी.), शास्त्री भवन, नई दिल्ली।	सदस्य
7.	प्रो. हरिशंकर प्रसाद दर्शन विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली-110007 ।	सदस्य
8.	प्रो. भुवन चन्देल सेन्टर ऑफ स्टडीज़ इन सिविलाइजेशन, दर्शन भवन, 36 तुगलकाबाद, इन्टीच्यूशनल एरिया, बत्रा हास्पिटल के पास मेहरौली, बदरपुर रोड, नई दिल्ली-110062 ।	सदस्य
9.	डॉ. टशी पलजोर मैत्री निवास, भजोगी, डाकघर-मनाली, जिला कुल्लू, हिमाचल प्रदेश।	सदस्य
10.	डॉ. डी. आर. सिंह उपाचार्य (अर्थशास्त्र), केन्द्रीय तिब्बती अध्ययन विश्वविद्यालय, सारनाथ, वाराणसी।	सदस्य
11.	प्रो. लोब्संग तेनज़िन, संकायाध्यक्ष तिब्बती चिकित्सा विद्या विभाग, केन्द्रीय तिब्बती अध्ययन विश्वविद्यालय,	सदस्य

सारनाथ, वाराणसी।

12. डॉ. देवराज सिंह सदस्य-सचिव

कुलसचिव,
केन्द्रीय तिब्बती अध्ययन विश्वविद्यालय,
सारनाथ, वाराणसी।

परिशिष्ट-4

विद्वत् परिषद् के सदस्य (दिनांक 31-3-2010)

क्र.सं.	नाम	पद
1.	प्रो. गेशे ङवङ् समतेन, कुलपति केन्द्रीय तिब्बती अध्ययन विश्वविद्यालय, सारनाथ, वाराणसी।	अध्यक्ष
2.	प्रो. लोब्संग तेनज़िन केन्द्रीय तिब्बती अध्ययन विश्वविद्यालय, सारनाथ, वाराणसी।	सदस्य
3.	प्रो. सोनम ग्यात्सो केन्द्रीय तिब्बती अध्ययन विश्वविद्यालय, सारनाथ, वाराणसी।	सदस्य
4.	डॉ. बी. बी. चक्रवर्ती केन्द्रीय तिब्बती अध्ययन विश्वविद्यालय, सारनाथ, वाराणसी।	सदस्य
5.	डॉ. टशी छेरिंग (एस.) केन्द्रीय तिब्बती अध्ययन विश्वविद्यालय, सारनाथ, वाराणसी।	सदस्य
6.	डॉ. डी. डी. चतुर्वेदी केन्द्रीय तिब्बती अध्ययन विश्वविद्यालय,	सदस्य

सारनाथ, वाराणसी।

7. डॉ. किरण सिंह — सदस्य
केन्द्रीय तिब्बती अध्ययन विश्वविद्यालय,
सारनाथ, वाराणसी।

8. भिक्षु फुनछोक दोन्डुप — सदस्य
केन्द्रीय तिब्बती अध्ययन विश्वविद्यालय,
सारनाथ, वाराणसी।

9. डॉ. टाशी छेरिंग (जे.) — सदस्य
केन्द्रीय तिब्बती अध्ययन विश्वविद्यालय,
सारनाथ, वाराणसी।

10. भिक्षु गोरिग तेनज़िन छोगदेन — सदस्य
केन्द्रीय तिब्बती अध्ययन विश्वविद्यालय,
सारनाथ, वाराणसी।

11. डॉ. गीता बरुआ — सदस्य
केन्द्रीय तिब्बती अध्ययन विश्वविद्यालय,
सारनाथ, वाराणसी।

12. भिक्षु लोब्संग यरफेल — सदस्य
केन्द्रीय तिब्बती अध्ययन विश्वविद्यालय,
सारनाथ, वाराणसी।

13. भिक्षु जी. एल. एल. वांग छुक — सदस्य
केन्द्रीय तिब्बती अध्ययन विश्वविद्यालय,

सारनाथ, वाराणसी।

14. डॉ. एम. पी. एस. चन्देल — सदस्य
केन्द्रीय तिब्बती अध्ययन विश्वविद्यालय,
सारनाथ, वाराणसी।

15. डॉ. टशी छेरिंग (टी) — सदस्य
केन्द्रीय तिब्बती अध्ययन विश्वविद्यालय,
सारनाथ, वाराणसी।

16. भिक्षु दोर्जे दमडुल — सदस्य
केन्द्रीय तिब्बती अध्ययन विश्वविद्यालय,
सारनाथ, वाराणसी।

17. प्रो. एस. एस. बहुलकर — सदस्य
केन्द्रीय तिब्बती अध्ययन विश्वविद्यालय,
सारनाथ, वाराणसी-221007 ।

18. प्रो. भुवन चन्देल — सदस्य
1050- I, HIG, सेक्टर-39-B
चण्डीगढ़-160036 ।

19. प्रो. आर. सी. तिवारी — सदस्य
बी./315, सेक्टर 'बी.'
महानगर, लखनऊ ।

20. प्रो. एन. एच. समतानी — सदस्य

सुजाता कुटीर, प्लॉट नं. 5,
झूलेलाल कालोनी महमूरगंज,
वाराणसी-221010 ।

21. प्रो. कृष्णनाथ सदस्य
एस-11/56, डी-1, नवापुरा,
मवईया सारनाथ, वाराणसी-221007 ।

22. प्रो. एस. के. पाठक सदस्य
आकाशदीप, अबनपल्ली, शान्तिनिकेतन,
पश्चिम बंगाल-371235 ।

23. प्रो. कपिल कपूर सदस्य
सेन्टर ऑफ लिंगुइस्टिक्स एण्ड इंग्लिश स्कूल ऑफ लैंग्वेज्स,
जे. एन. यू., नई दिल्ली-110067 ।

24. प्रो. बी. एन. सरस्वती सदस्य
एन. के. बोस मेमोरियल फाउण्डेशन,
बी-8/9-12 गम्भीर सिंह का बाड़ा, गौरीगंज,
वाराणसी-221001 ।

25. भिक्षु दोबुम टुल्कू, निदेशक सदस्य
तिब्बत हाऊस, 1, इन्स्टीट्यूशनल एरिया,
लोधी रोड, नई दिल्ली।

26. प्रो. सेम्पा दोर्जे सदस्य
बाजू रतनकुटी, 11 माइल स्टोन,

कलिम्पोंग, दार्जिलिंग (पश्चिम बंगाल)।

27. डॉ. देवराज सिंह सदस्य-सचिव

कुलसचिव,
केन्द्रीय तिब्बती अध्ययन विश्वविद्यालय,
सारनाथ, वाराणसी-221007 ।

परिशिष्ट-5

वित्त समिति के सदस्य (दिनांक 31-3-2010)

क्र.सं.	नाम	पद
1.	प्रो. गेशे ङवङ् समतेन, कुलपति केन्द्रीय तिब्बती अध्ययन विश्वविद्यालय, सारनाथ, वाराणसी।	अध्यक्ष
2.	श्री उमेश कुमार निदेशक, संस्कृति मन्त्रालय, भारत सरकार, नई दिल्ली।	सदस्य
3.	निदेशक/उपसचिव (वित्त) भारत सरकार, संस्कृति मन्त्रालय (आई.एफ.डी.) शास्त्री भवन, नई दिल्ली।	सदस्य
4.	प्रो. एस. के. पाठक आकाशदीप, अबनपल्ली, विश्वभारती, शान्तिनिकेतन-731235 (पश्चिम बंगाल)।	सदस्य
5.	डॉ. देवराज सिंह	सदस्य-सचिव

परिशिष्ट

कुलसचिव,
केन्द्रीय तिब्बती अध्ययन विश्वविद्यालय,
सारनाथ, वाराणसी-221007 ।

परिशिष्ट-6

प्रकाशन समिति के सदस्य (दिनांक 31-3-2010)

क्र.सं.	नाम	पद
1.	प्रो. गेशे ङवङ् समतेन कुलपति, केन्द्रीय तिब्बती अध्ययन विश्वविद्यालय, सारनाथ, वाराणसी।	अध्यक्ष
2.	प्रो. गेशे येशे थपखे केन्द्रीय तिब्बती अध्ययन विश्वविद्यालय, सारनाथ, वाराणसी।	सदस्य
3.	प्रो. एन. एच. समतानी सुजाता कुटीर, प्लॉट नं. 5, झूलेलाल कालोनी महमूरगंज, वाराणसी-221010 ।	सदस्य
4.	प्रो. रमेशचन्द्र तिवारी बी./315, सेक्टर 'बी.' महानगर, लखनऊ ।	सदस्य
5.	प्रो. एस. एस. बहुलकर केन्द्रीय तिब्बती अध्ययन विश्वविद्यालय, सारनाथ, वाराणसी।	सदस्य

6.	डॉ. देवराज सिंह कार्यवाहक कुलसचिव, केन्द्रीय तिब्बती अध्ययन विश्वविद्यालय, सारनाथ, वाराणसी।	सदस्य
7.	ग्रन्थालयाध्यक्ष शान्तरक्षित ग्रन्थालय, केन्द्रीय तिब्बती अध्ययन विश्वविद्यालय, सारनाथ, वाराणसी।	सदस्य
8.	सम्पादक अनुवाद विभाग, केन्द्रीय तिब्बती अध्ययन विश्वविद्यालय, सारनाथ, वाराणसी।	सदस्य
9.	सम्पादक पुनरुद्धार विभाग, केन्द्रीय तिब्बती अध्ययन विश्वविद्यालय, सारनाथ, वाराणसी।	सदस्य
10.	श्री सङ्ग्ये तेन्दर अध्यक्ष तिब्बती प्रकाशन, लाइब्रेरी ऑफ टिबेटन वर्क्स एण्ड ऑर्काइब्स, धर्मशाला (हि.प्र.)।	सदस्य
11.	प्रकाशन प्रभारी	सदस्य-सचिव

वार्षिक रिपोर्ट 2009-2010

केन्द्रीय तिब्बती अध्ययन विश्वविद्यालय,
सारनाथ, वाराणसी।